14-20 NOVEMBER 2022, BHOPAL (INDIA)

TAGORE INTERNATIONAL LITERATURE & ARTS FESTIVAL

विश्व रंग

भारतीय संस्कृति, वैश्विक मंच!

VOL 4: 15 NOVEMBER,2022 | PAGE 1

Organised by RNTU Rabindranath TAGORE UNIVERSITY

टैगोर अंतर्राष्ट्रीय साहित्य एवं कला महोत्सव

विश्वविद्यालय के मुक्ताकाश में रबिन्द्रनाथ टैगोर की प्रतिमा पर फूलों का अभिषेक करते हुए विश्व रंग के निदेशक श्री संतोष चौबे एवं सह-निदेशक विश्व रंग डॉ सिद्धार्थ चतुर्वेदी व डॉ. अदिति चतुर्वेदी

अदब और तहजीब की रंगों-महक से गुलजार भोपाल की सरजमीं पर टैगोर अंतरराष्ट्रीय साहित्य एवं कला महोत्सव

विश्व रंग 2022 का भव्य शुभारंभ

विश्व रंग के मंच पर कौशिकी चक्रवर्ती ने शास्त्रीय गायन प्रस्तुत किया ।

- कौशिकी की महफिल में उमड़ा श्रोताओं का रेला।
- सुर पराग के रवीन्द्र संगीत में गूँजा टैगोर का पैगाम।

साहित्य, संस्कृति और कलाओं के विविध रंगों के बीच संपूर्ण विश्व को शांति और सद्‌भावना का संदेश देता विश्व रंग आज भारत की सांस्कृतिक राजधानी भोपाल में अपनी रचनात्मक भव्यता और गरिमा के साथ आज शुरू हुआ।

भोपाल। गीत-संगीत की सुमधुर स्वर लहरियों से गूँजती भोपाल की वादियों में 'विश्वरंग' का जलसा तहजीब के बेमिसाल सिलसिलों का मंजर समेट लाया। रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय में सोमवार की सुबह जबलपुर के सुर पराग वृन्द ने रवीन्द्र संगीत से गुलजार की तो ढलती शाम कौशिकी चक्रवर्ती के कंठ की कशिश ने सुर-ताल और लयकारी में बंधी गायिकी का करिश्माई रंग घोला। साहित्य और कलाओं के अंतरराष्ट्रीय महोत्सव 'विश्व रंग - 2022' का यह सुरीला आगाज था। संस्कृति की सुन्दर छवियों में रचे-बसे आठ दिनों के विराट समागम का आरंभ इस तरह 'कला उत्सव' से हुआ। सोमवार की सुबह हरी-भरी पहाड़ियों से घिरे टेगोर विश्वविद्यालय के मुक्ताकाश में टैगोर की प्रतिमा पर सामूहिक फूलों का अभिषेक करते हुए समारोह का औपचारिक शुभारंभ हुआ। विश्व रंग के निदेशक -कुलाधिपति संतोष चौबे ने इस मौके पर महोत्सव के शुभारंभ की घोषणा करते हुए कहा कि विश्वरंग अपने चौथे संस्करण में हजारों रंगों को समेटते हुए मध्य प्रदेश की सांस्कृतिक राजधानी भोपाल में अपने नए कलेवर के साथ आपके समक्ष आज प्रस्तुत हो रहा है। आज विश्वरंग 2022 गुरुदेव रबीन्द्रनाथ टैगोर के आशीर्वाद से विश्वविद्यालय के प्रांगण में अपने रंग बिखेर रहा है।

इसी के साथ कोलकाता के संगीतकार शुभव्रत सेन और मानस सरकार ने मिलकर दो तारा पर गुरूदेव के प्रार्थना गीतों की धुन बजाकर पूरे परिसर को सात्विक गरिमा प्रदान की। शुभारंभ का यह मुहूर्त तब और महक उठा जब जबलपुर के सुर पराग कला समूह ने प्रेम, प्रकृति, प्रार्थना और देशभक्ति से सराबोर टैगोर की कविताओं का वृन्दगान किया।

शाम के सांस्कृतिक कार्यक्रम के शुभारंभ के पूर्व विश्व रंग के निदेशक श्री संतोष चौबे ने कहा कि विश्व रंग अब देश का सबसे बड़ा फेस्टिवल बन गया है। वर्ष 2019 में जब इसकी शुरुआत हुई थी तब इसमें 12 देश शामिल थे आज विश्व रंग में 50 देश शामिल हो चुके हैं। आज के कार्यक्रम में महापौर मालती राय भी बतौर मुख्य अतिथि मौजूद रहीं। उन्होंने शहर की ओर से कौशिकी चक्रवर्ती का स्वागत किया।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथी महापौर सुश्री मालती रॉय ने कौशिकी चक्रवर्ती का स्वागत किया

विश्व विद्यालय परिसर में शारदा सभागार में सुर पराग जबलपुर द्वारा रवींद्र संगीत की वृन्द प्रस्तुति

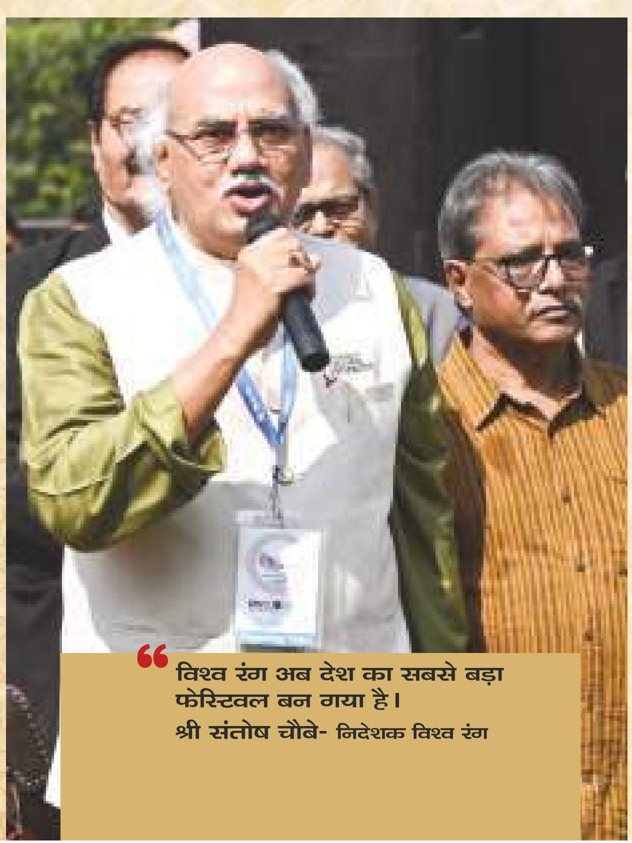

"विश्व रंग अब देश का सबसे बड़ा फेस्टिवल बन गया है।
श्री संतोष चौबे- निदेशक विश्व रंग

रविवार को रवीन्द्र भवन में टैगोर चिल्ड्रंस पेंटिंग प्रतियोगिता में उमड़ा विद्यार्थियों का सैलाब

सोमवार की सुबह रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के मुक्ताकाश में विश्व रंग के निदेशक श्री संतोष चौबे ने किया आग़ाज़।

कोलकाता के संगीतकार शुभव्रत सेन और मानस सरकार ने मिलकर दो तारा पर गुरूदेव के प्रार्थना गीतों की धुन बजाकर पूरे परिसर को सात्विक गरिमा प्रदान की। प्रख्यात गायिका तापसी नागराज के मुख्य स्वर तथा संयोजन में तैयार हुआ यह अद्भुत सांगीतिक रूपक टैगोर की एक दर्जन कविताओं के ज़रिये मनुष्यता का महागान बन गया। संगीतकार बाँसुरी वादक मुरलीधर नागराज की परिकल्पना और श्रीधर नागराज के अनूठे प्रयोगों को बीस कलाकारों ने मिलकर एक रोमांचकारी एहसास में बदल दिया। इस गुलदस्ते में टैगोर के कालजयी गीत 'एकला चलो रे, और आमार शोनार बांग्ला से लेकर राष्ट्रगान जन गण मन तक वो तमाम रंग और खुशबुएँ थीं जो गुरूदेव के रवीन्द्र संगीत में तैरती बरसों से सारी दुनिया की रूह में धड़कती रही हैं।

Vishwarang Partner Countries

INDIA, NETHERLANDS, RUSSIA, FIJI, SRI LANKA, CANADA, UKRAINE, TRINIDAD, UZBEKISTAN, SINGAPORE, AUSTRALIA, UAE, SWEDEN, U.S.A., KAZAKHSTAN, TOBAGO, BULGARIA, SPAIN

TAGORE INTERNATIONAL LITERATURE & ARTS FESTIVAL
विश्व रंग
भारतीय संस्कृति, वैश्विक मंच!

14-20 NOVEMBER 2022, BHOPAL(INDIA)

Get.Set.Parent™
A Guide To New Age Parenting
presents

CHILDREN'S LITERATURE, ART & MUSIC FESTIVAL
विश्व रंग
18th-20th Nov, 2022

रवीन्द्र भवन में टैगोर चिल्ड्रंस पेंटिंग प्रतियोगिता में उमड़ा विद्यार्थियों का सैलाब

पेंटिंग प्रतियोगिता में बच्चों ने उकेरी अपनी कल्पनाएं विश्व रंग में सम्मानित होंगे बाल चित्रकार

भोपाल। बच्चों में छिपी प्रतिभा निखारने के उद्देश्य से'विश्वरंग के तत्वावधान में और गेट सेट पेरेंट चिल्ड्रंस लिटरेचर, आर्ट एंड म्यूजिक फेस्टिवल के अंतर्गत स्कूली विद्यार्थियों की रचनात्मकता को प्रोत्साहित करने की सार्थक पहल के तहत रविवार को रवीन्द्र भवन में टैगोर चिल्ड्रंस पेंटिंग कॉम्पीटिशन का भव्य आयोजन हुआ। जिसमें सरकारी, प्राइवेट एवं पब्लिक स्कूलों के लगभग 2000 से अधिक बच्चों ने भाग लिया। प्रतियोगिता तीन कैटेगरी में आयोजित हुई। जिसमें कक्षा 6से 8, कक्षा 9-10 और कक्षा 11-12 के छात्र शामिल हुए।

इस मौके पर विश्व रंग के निदेशक श्री संतोष चौबे, प्रख्यात चित्रकार श्री अशोक भौमिक, विश्वरंग के सह निदेशक श्री लीलाधर मंडलोई, सह निदेशक डॉ सिद्धार्थ चतुर्वेदी, सह निदेशक डॉ अदिति चतुर्वेदी वत्स के विशेष रुप से बच्चों का उत्साहवर्धन करते नजर आए।

इस अवसर पर श्री संतोष चौबे जी ने कहा की इस तरह की प्रतियोगिताओं में भाग लेने से बच्चों में कलात्मक व मानसिक विकास होता है। इसलिए बच्चों को अपनी रूचि अनुसार इस तरह की प्रतियोगिताओं में भाग लेना चाहिए। प्रतियोगिताओं में भाग लेने से बच्चों का सर्वांगीण विकास होता है।आज रवीन्द्र भवन का माहौल देखते ही बन रहा था। विद्यार्थियों ने अपनी कल्पनाओं को पेंटिंग सीट पर उकेरा और उनमें रंगों के माध्यम से अपनी प्रतिभा दिखाई। किसी बच्चे ने मधुबनी आर्ट तो किसी बच्चे ने राधा कृष्ण, काली माता, तो किसी बच्चे ने भारत सरकार द्वारा मध्य प्रदेश की धरती पर लाए गए चीते, तो किसी बच्चे ने जंगल में सूर्यास्त के समय को सुनहरे रंगों के माध्यम से दिखाया, तो किसी बच्चे ने बुद्ध से प्रेरित होकर उनके धर्म, अनुशासन, चरित्र और ज्ञान का संदेश देते हुए बुद्ध की पेंटिंग बनाई, तो किसी बच्चे ने महारानी लक्ष्मी बाई, वीर शिवाजी, तो किसी बच्चे ने भारतीय महिला को सशक्त प्रदर्शित करते हुए कूची चलाई।

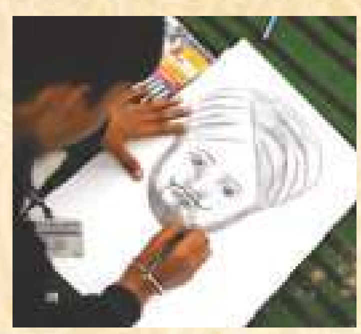
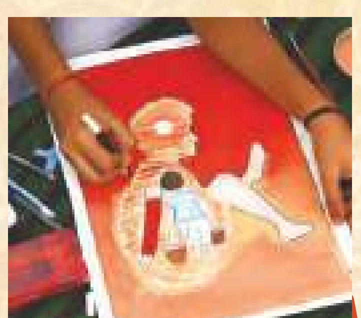

Vishwarang Partner Countries

IRELAND QATAR JAPAN KENYA U.K. DENMARK BELGIUM BANGLADESH MAURITIUS CHINA LUXEMBOURG SOUTH AFRICA NEW ZEALAND GERMANY NEPAL BELGIUM GHANA PORTUGAL

विश्व रंग 2022

"जब भी विश्व रंग या रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय में बुलाया जाएगा तो आपके भोपाल शहर में जरूर आऊंगी । - कौशिकी चक्रवर्ती

कौशिकी चक्रवर्ती की कशिश भरी गायकी पर निहाल हुए श्रोता। शाम को रवीन्द्र भवन में 'विश्व रंग' का ताना-बाना कौशिकी के शास्त्रीय गायन के आसपास कुछ ऐसा तैयार हुआ कि वक़्त के बहुत पहले ही सभागार श्रोताओं से भर गया। तालीम और रियाज़ उनकी प्रतिभा की वो पूँजी है जिसने पटियाला घराने की विरासत को नए सिरे से निखार दिया है। 'विश्व रंग' के मंच पर भी उनकी आवाज़ ने आज ऐसा ही उजास बिखेरा। मुराद अली की सारंगी, तन्मय देवचके के हारमोनियम और यशवंत वैष्णव के तबले ने कौशिकी के गले से बहते सुरों के दरिया को इस खूबी से लय-ताल में थामा कि मौसिक़ी के कद्रदान इस कारवाँ में बहते रहे। कौशिकी ने गाने के लिए **बंदिश होवन लागी सांझ, लाखों में एक चुन चुन बुलावे को चुना...**। जाड़े की गुलाबी दस्तक से पुरखुश श्रोताओं के मिज़ाज पर इस राग की बंदिश ने कुछ ऐसा असर किया कि श्रोता पूरे समय बंधे रहे। कभी राग के सुरों में मन रमा तो कभी कौशिकी के कंठ से झरती मधुरिमा में बिंधा सा रह गया।

कार्यक्रम में कौशिकी चक्रवर्ती ने श्रोताओं से बात करते हुए कहा कि विश्व रंग में जिस तरह स्वागत हुआ उससे अभिभूत होकर उन्होंने कहा कि जब भी विश्व रंग या रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय में बुलाया जाएगा तो आपके भोपाल शहर में जरूर आऊंगी।

Organised by RNTU Rabindranath TAGORE UNIVERSITY

Powered By: AISECT | AISECT UNIVERSITY | SCOPE GROUP OF INSTITUTIONS | DR. C.V. RAMAN UNIVERSITY | Get.Set.Parent | Brainy Bear

विश्व रंग 2022 की दूसरी शाम

रविन्द्र भवन मुक्ताकाश में रामायण का मंचन

विश्व रंग के दूसरे दिन शाम को श्रीराम भारतीय कला केंद्र द्वारा रामायण का मंचन किया गया जो कि गोस्वामी तुलसीदास जी की रामचरितमानस पर आधारित रही। इसमें कलाकारों ने रामायण के प्रमुख प्रसंगों को नृत्य नाटिका के रूप में पेश किया। इसमें जहां एक ओर भारतीय एवं शास्त्रीय नृत्य की झलक थी तो वहीं दूसरी ओर लोक डांडिया और आदिवासी नृत्यों को भी शामिल किया गया था। इसके प्रमुख प्रसंगों में क्रॉन्च वध, देव-असुर संग्राम, विष्णु वरदान, राम जन्म और विद्या अभ्यास, ताड़का वध, अहिल्या उद्धार, राम सीता मिलन और स्वयंवर, परशुराम संवाद, कैकयी वरदान, केवट संवाद, भरत मिलाप, पंचवटी, सुर्पनखा, रावण दरबार, स्वर्ण मृग, सीता हरण, जटायु वध, राम लक्ष्मण की पंटवटी में पुनः आगमन, शबरी भक्ति, किष्किंधा, अशोक वाटिका, लंका दहन, लक्ष्मण-मेघनाद युद्ध, राम-रावण युद्ध, सीता अग्नि परीक्षा, श्रीराम राज्यअभिषेक शामिल रहे। रामायण की खासियत रही कि इसमें रावण द्वारा कथकली के जरिए अपने अभिनय को पेश किया गया। इसी प्रकार अन्य कलाकारों ने भी विभिन्न लोक एवं शास्त्रीय नृत्यों के जरिए रामायण को मंचित किया।

श्री राम भारतीय कला केंद्र के समूह के संयोजक गगन तिवारी बताते हैं कि श्रीराम भारतीय कला केंद्र द्वारा विश्वभर में रामायण मंचन किया जाता है। इस समूह द्वारा विश्वभर में 2000 से अधिक प्रस्तुतियां दी जा चुकी हैं। इसके जरिए भारतीय संस्कृति को वैश्विक मंचों पर प्रस्तुत करने और मानवता के संदेश को विश्व तक पहुंचाने का प्रयास किया जा रहा है। रामायण का निर्देशन शोभा दीपक सिंह द्वारा किया गया है।

श्री जीतेंद्र लिटोरिया
कार्यक्रम के मुख्य अतिथि
एवं अध्यक्ष म.प्र. खादी ग्रामोद्योग

प्रो. भरत शरण सिंह
कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि
एवं अध्यक्ष म.प्र. निजी विश्वविद्यालय विनियामक आयोग

श्री संतोष चौबे
निदेशक, विश्व रंग

श्री सिद्धार्थ चतुर्वेदी
सह-निदेशक, विश्व रंग ने कलाकारों का सम्मान किया

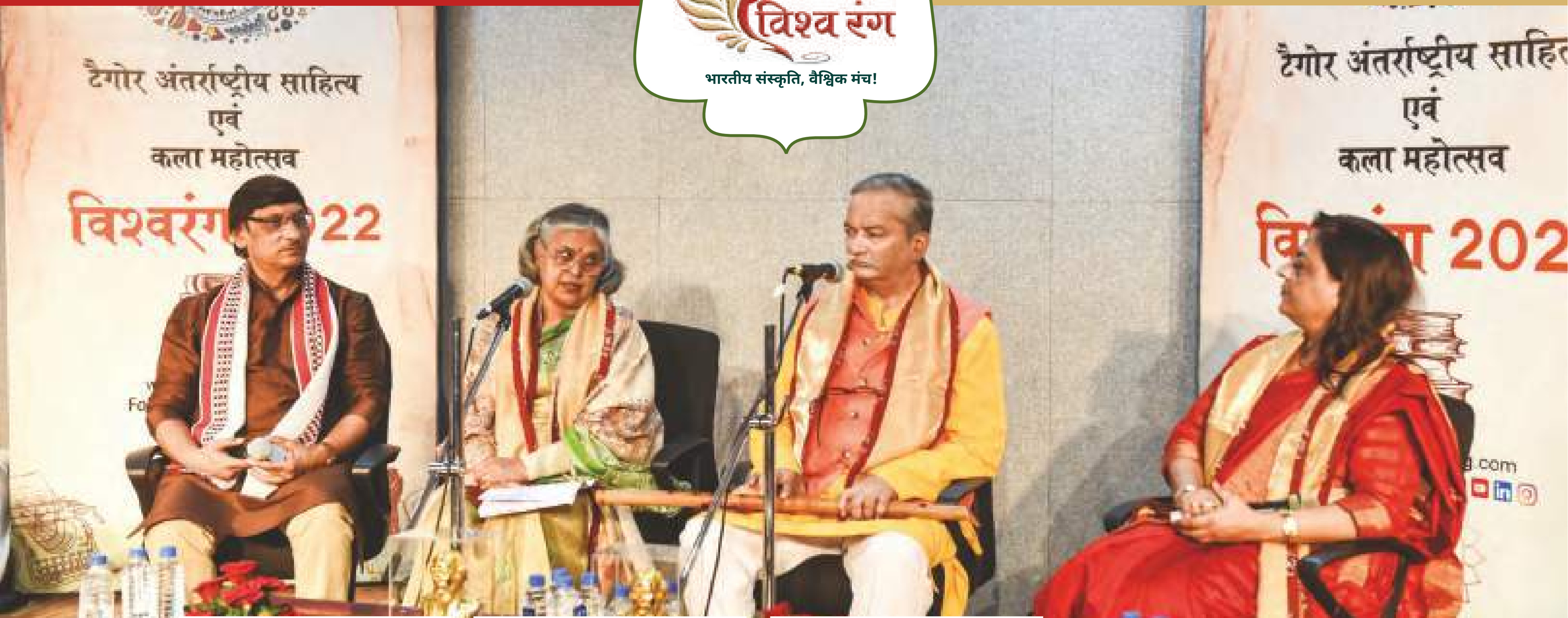

श्री नित्यानंद हल्दीपुरकर
बांसुरीवादक

सुश्री छाया गांगुली
पार्श्व गायिका

सुश्री चित्रा शर्मा
कार्यक्रम अधिकारी
सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय

अलाउद्दीन खां की बेटी और शिष्य मां अन्नपूर्णा देवी के संस्मरण

भोपाल। विश्व रंग के चौथे संस्करण के दूसरे दिन अन्नपूर्णा देवी के संस्मरण कार्यक्रम में अन्नपूर्णा देवी के शिष्य और देश के जाने-माने बांसुरी वादक नित्यानंद हल्दीपुरकर और पार्श्व गायिका छाया गांगुली उपस्थित रहीं। विषय प्रवर्तन कला चिंतक विनय उपाध्याय ने किया। भारतीय सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय की कार्यक्रम अधिकारी चित्रा शर्मा ने चर्चा को आगे बढ़ाया। बाबा अला उद्दीन खां की बेटी और शिष्या मां अन्नपूर्णा देवी के संस्मरण को सुनाते हुए सुप्रसिद्ध बांसुरी वादक नित्यानंद हल्दीपुरकर ने कहा कि मेरे द्वारा वादन ही असल में मां अन्नपूर्णा देवी का संस्मरण होगा। उन्होंने कहा कि अन्नपूर्णा देवी के संगीत की तुलना नहीं की जा सकती। इसी क्रम में भारतीय चित्रपट की पार्श्व गायिका छाया गांगुली ने मां अन्नपूर्णा देवी के संस्मरण को याद करते हुए कहा कि कॉलेज के दिनों से ही मां अन्नपूर्णा देवी का सानिध्य प्राप्त होता रहा। उन्होंने मां अन्नपूर्णा देवी को सुर तपस्विनी कहते हुए कहा कि मेरे लिए अन्नपूर्णा देवी के साथ समय बिताना सत्संग जैसा लगता था। गौरतलब है कि मां अन्नपूर्णा देवी को सुरबहार वाद्य यंत्र में सिद्धि प्राप्त थीं। इसके अलावा मां अन्नपूर्णा देवी राग मालकौंस में सिद्ध हो गई थीं। लोग कहते हैं जब वह राग मालकौंस का सुर लगाती थीं तो घर के बाहर लगे पेड़ जोर-जोर से हिलने लगते थे। देश के प्रसिद्ध बांसुरी वादक हरिप्रसाद चौरसिया एवं अन्य शिष्यों ने मां अन्नपूर्णा देवी के चरणों में ही सुर साधा।

Vishwarang Partner Countries

INDIA NETHERLANDS RUSSIA FIJI SRI LANKA CANADA UKRAINE TRINIDAD UZBEKISTAN SINGAPORE AUSTRALIA UAE SWEDEN U.S.A. KAZAKHSTAN TOBAGO BULGARIA SPAIN

TAGORE INTERNATIONAL LITERATURE & ARTS FESTIVAL
विश्व रंग
भारतीय संस्कृति, वैश्विक मंच!

संगीत का धर्म

> " हमें बहुत सारा धैर्य दे, विनम्रता दे, अपने से बेहतर को अपने आगे जगह देने और उसमें खुश रहने को प्रेरित करे
>
> यतीन्द्र मिश्र
> संगीत- अध्येता तथा लता सुरगाथा के रचयिता

टेगोर अंतर्राष्ट्रीय साहित्य एवं कला महोत्सव 'विश्वरंग-2022' के दूसरे दिन सुबह के दूसरे सत्र में एक महत्वपूर्ण और यादगार परिचर्चा का अनूठा स्वाद श्रोताओं तक पहुँचा। परिचर्चा का विषय था 'संगीत का धर्म'। इस परिचर्चा में प्रसिद्ध ध्रुपद गायक उमाकान्त गुन्देचा, प्रसिद्ध पार्श्व गायिका और आकाशवाणी की प्रस्तोता विदुषी छाया गांगुली और संगीत- अध्येता तथा लता सुरगाथा के रचयिता यतीन्द्र मिश्र के विचारों और उद्गारों की अद्भुत जुगलबंदी इस तरह अपने उत्कर्ष पर पहुँची कि श्रेता वाह वाह कर उठे। आदरणीय संतोष चौबे जी ने बतौर सत्र के अध्यक्ष इस परिचर्चा को अहम शिरकत प्रदान की। श्री लीलाधर मंडलोई ने विनय उपाध्याय जी के आग्रह मान देते हुए विशेष संचालक की भूमिका का बखूबी निर्वाह किया, और मुख्य संचालन की बागडोर विनय जी ने सँभाल रखी थी। दोनों संचालकों ने इस ख़ूबी से वक्ताओं से सवाल किए कि 'संगीत का धर्म' जैसे एक धीर-गंभीर विषय का मर्म हल्के और गहरे दोनों किस्म के रंगों में खिलकर सभागार में बिखर गया। लगभग डेढ़ घंटे चले इस सत्र की शुरुआत में यतीन्द्र मिश्र ने 'संगीत का धर्म क्या है' इस सवाल के जवाब में कहा कि संगीत का धर्म है कि वह हमें बहुत सारा धैर्य दे, विनम्रता दे, अपने से बेहतर को अपने आगे जगह देने और उसमें खुश रहने को प्रेरित करे। विदुषी छाया गांगुली ने पन्नालाल घोष, तानसेन, हरिदास, अब्दुल क़रीम खाँ, पंडित निखिल बनर्जी, स्वामी विवेकानंद, रामकृष्ण परमहंस, बिस्मिल्ला खाँ आदि महान विभूतियों से जुड़े संस्मरणों के आधार पर यह बताया कि संगीत का धर्म ईश्वर की और आध्यात्मिक चेतना की प्राप्ति ही है। उमाकांत गुन्देचा ने इस अवसर पर कहा कि-'संगीत का कोई धर्म नहीं, वह एक माध्यम है, धर्म तो कर्ता का है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि संगीतकार किस भाव से संगीत रच रहा है, यही भाव संगीतकार को उसके स्वभाव तक पहुँचाता है।

श्री यतीन्द्र मिश्र
लता सुरगाथा के रचयिता

श्री संतोष चौबे
निदेशक, विश्व रंग

श्री लीलाधर मंडलोई
सह निदेशक, विश्व रंग

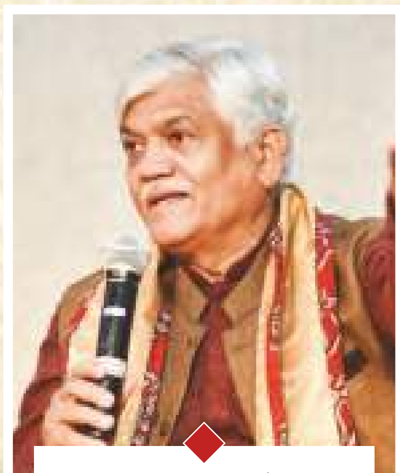

श्री उमाकांत गुंदेचा
ध्रुपद गायक

Vishwarang Partner Countries

IRELAND | QATAR | JAPAN | KENYA | U.K. | DENMARK | BELGIUM | BANGLADESH | MAURITIUS | CHINA | LUXEMBOURG | SOUTH AFRICA | NEW ZEALAND | GERMANY | NEPAL | BELGIUM | GHANA | PORTUGAL

रवींद्र भवन के मुक्ताकाश मंच पर श्री राम भारतीय कला केंद्र द्वारा गोस्वामी तुलसीदास जी की रामचरितमानस पर आधारित रामायण की चित्रमय झलकियां

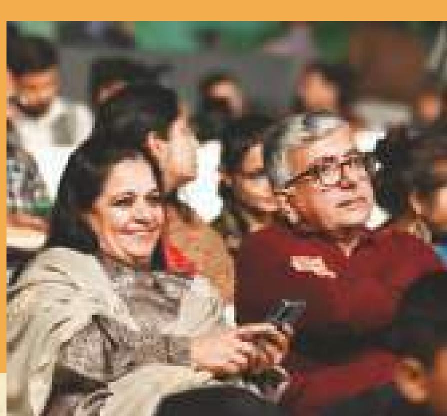

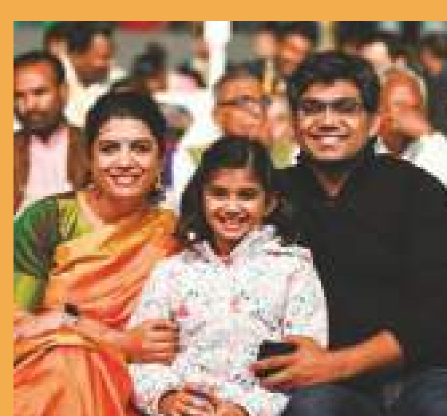

पूर्वरंग में सुश्री गीता पराग ने कबीर पर संगीतमय प्रस्तुति दी एवं डॉ विनिता चौबे ने उनका सम्मान किया।

Organised by RNTU Rabindranath TAGORE UNIVERSITY

Powered By: AISECT AISECT UNIVERSITY SCOPE GROUP OF INSTITUTIONS DR. C.V. RAMAN UNIVERSITY Get.Set.Parent Brainy Bear

> "विश्वरंग मप्र की पहचान बनता जा रहा है। मप्र शासन के आगामी कला एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय का सहयोग लेकर उन्हें वैश्विक मंच देने का काम करेंगे।
>
> **डॉ. मोहन यादव**
> उच्च शिक्षा मंत्री, म.प्र.

टैगोर अंतर्राष्ट्रीय साहित्य एवं कला महोत्सव 'विश्व रंग' में उच्च शिक्षा मंत्री, म.प्र. डॉ. मोहन यादव ने की शिरकत

भोपाल। विश्व रंग के तीसरे दिन सुबह की शुरुआत वैचारिक सत्रों से हुई तो वहीं शाम नाटक 'बंदिशें' और संगीत प्रस्तुति के नाम रही। समारोह में मप्र के उच्च शिक्षा विभाग के माननीय मंत्री डॉ. मोहन यादव जी कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित हुए। इस दौरान मंत्री डॉ.. मोहन यादव जी, श्री संतोष चौबे जी और नीदरलैंड के प्रवासी भारतीय श्री रामा तक्षक जी गीत 'राम घर आए हैं...' पर पूर्व रंग में धन्नूलाल सिन्हा और उनके साथियों द्वारा प्रस्तुत गीतों पर जमकर झूमें। वहीं अपने वक्तव्य में डॉ. मोहन यादव ने कहा कि रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय कला संस्कृति और साहित्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है। यह प्रसन्नता की बात है कि विश्वरंग में 50 से अधिक प्रवासी भारतीय शामिल हो रहे हैं। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी कला और साहित्य को महत्व दिया जा रहा है। उन्होंने कहा कि मप्र देश में ऐसा पहला राज्य बना जिसने नई शिक्षा नीति लागू की और हिंदी में मेडिकल की पढ़ाई प्रारंभ की। विश्व रंग में हिंदी और भारतीय भाषाओं को केंद्र में रखा गया है। इसका लाभ आगे समाज में मिलेगा। साथ ही उन्होंने कहा कि विश्व रंग मप्र की पहचान बनता जा रहा है। इसलिए मप्र शासन के आगामी कला एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय का सहयोग लेकर उन्हें वैश्विक मंच देने का काम करेंगे। रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय लोक कला और संस्कृति को मंच देने का साहसिक कार्य कर रहा है।

- **कला महोत्सव में कला समीक्षकों ने समीक्षा की चुनौतियों पर की बातचीत**
- **कला महोत्सव में कलाकार के संघर्षों से रूबरू कराता नाटक बंदिशें की दी गई प्रस्तुति**
- **धन्नुलाल सिन्हा और उनके साथियों ने हबीब तनवीर के गीतों पर दी प्रस्तुति**
- **संगतकारों की अलक्षित भूमिका पर हुआ संवाद**

कला समीक्षा है एक आंतरिक संवाद

कला एवं साहित्य के अन्तर्राष्ट्रीय उत्सव 'विश्व रंग' में 'कला महोत्सव' के तीसरे दिन का आगाज 'कला समीक्षा की चुनौतियाँ' सत्र से हुआ। सत्र में विख्यात कला समीक्षक एवं कवि श्री प्रयाग शुक्ल, फिल्म एवं कला समीक्षक श्री विनोद भारद्वाज, फिल्म निर्माता-निर्देशक, समीक्षक श्री सुदीप सोहनी, मशहूर चित्रकार श्री अशोक भौमिक मौजूद थे। सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध फिल्म और थिएटर समीक्षक, वरिष्ठ प्रिंट और टीवी पत्रकार एवं सांस्कृतिक आलोचक श्री रवीन्द्र त्रिपाठी जी ने की। उन्होंने कहा कि कला पर भावुक होकर लिखना बहुत आवश्यक है। कलाकार और समीक्षकों का आपसी संवाद भी होना जरूरी है। श्री प्रयाग शुक्ल ने कहा कि कला समीक्षा दरअसल एक आंतरिक संवाद है। समीक्षकों को सभी कला विधाओं में रूचि रखनी होगी। श्री सोहनी ने फिल्म समीक्षा पर बात की और कहा कि अन्ततरू हर कला कविता है। श्री अशोक भौमिक के विचारों से सत्र की संजीदगी थोड़ी और बढ़ी। उन्होंने कहा कि हमारी परम्परा में देखना शामिल है ही नहीं, पूरी परम्परा आँख बंद करके देखने की परम्परा है। उन्होंने चित्रकला पर केन्द्रित होकर अपनी बातें कहीं, यह भी कहा कि कला को समझने की नहीं अनुभव करने की आवश्यकता है वैसे ही जैसे आप ढलते हुए सूरज को देख कर उसका आनंद लेते हैं, उसे अनुभव करते हैं, उसे समझने की कोशिश नहीं करते। सत्र के अंत में रबीन्द्रनाथ टैगौर विश्व विद्यालय के कुलाधिपति, साहित्य -संस्कृति कर्मी श्री सन्तोष चौबे ने समीक्षा और टेक्नोलॉजी की भूमिका पर भी बात रखी और यह भी कहा कि कला कृतियों को उनके सन्दर्भों से अलग नहीं किया जा सकता। श्री विनय उपाध्याय ने कहा कि किनारे पर बैठ कर लहरों की समीक्षा नहीं की जा सकती उसके लिए लहरों के भीतर उतरना बेहद जरूरी है।

कला महोत्सव में संगतकारों की अलक्षित भूमिका पर संवाद

टैगोर अंतरराष्ट्रीय सहित्य एवं कला महोत्सव 'विश्व रंग' के विचार सत्रों में एक अहम कड़ी जुड़ी 'संगतकारों की अलक्षित भूमिका' की। इस संवाद सत्र में प्रख्यात तबला वादक पद्मश्री पंडित विजय घाटे, कथक नृत्यांग्ना और कोरियोग्राफर शमा भाटे, कला लेखिका चित्रा शर्मा और कला समीक्षक विनय उपाध्याय ने अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर कथक में तबले की लयकारी और नृत्य से उसके रचनात्मक संयोग पर प्रदर्शन के माध्यम से प्रकाश डाला गया। विनय उपाध्याय ने कहा कि संगीत और नृत्य में संगत की आनिवार्य उपस्थिति है। लेकिन संगतकारों की अहमियत को ठीक से देखा जाना आवश्यक है। चित्रा शर्मा ने कथक की उन संरचनाओं को उद्धत किया जिनमें लय ताल का विशेष महत्व है। पंडित विजय घाटे ने अपनी ताल यात्रा के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डाला और संगतकारी के पक्ष में अपने अनुभव भी साझा किए। इस सत्र में चित्रा शर्मा की कथक पर केंद्रित पुस्तक का लोकार्पण भी किया गया।

सुश्री शीतल कोलवलकर
कथक डांसर

सुश्री चित्रा शर्मा
कला लेखिका

Vishwarang Partner Countries

INDIA · NETHERLANDS · RUSSIA · FIJI · SRI LANKA · CANADA · UKRAINE · TRINIDAD · UZBEKISTAN · SINGAPORE · AUSTRALIA · UAE · SWEDEN · U.S.A. · KAZAKHSTAN · TOBAGO · BULGARIA · SPAIN

TAGORE INTERNATIONAL LITERATURE & ARTS FESTIVAL
विश्व रंग
भारतीय संस्कृति, वैश्विक मंच!

14-20 NOVEMBER 2022, BHOPAL(INDIA)

कला समीक्षा की चुनौतियों पर संवाद

> “ कला कृतियों को उनके सन्दर्भों से अलग नहीं किया जा सकता।
>
> श्री संतोष चौबे
> निदेशक, विश्व रंग

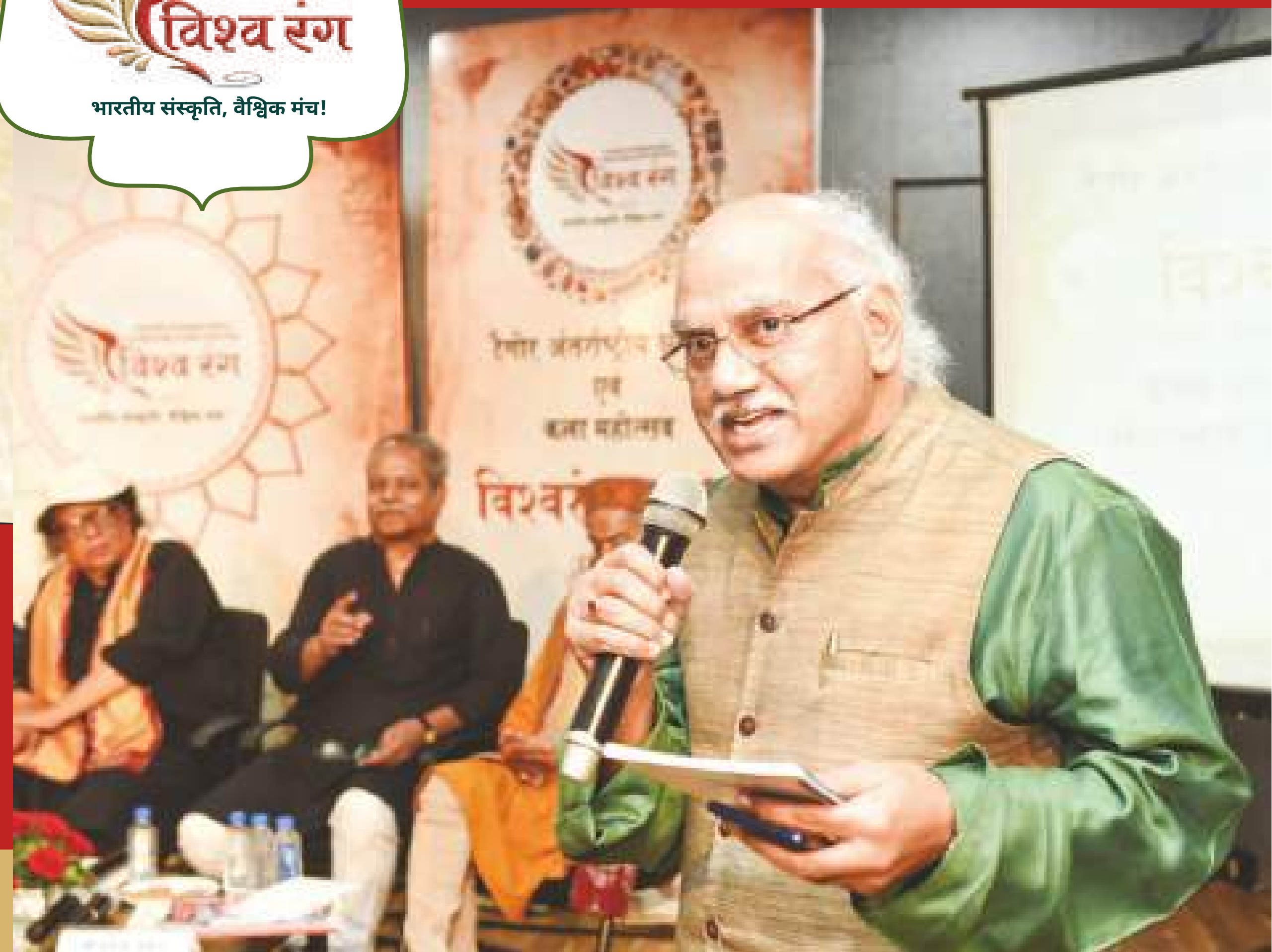

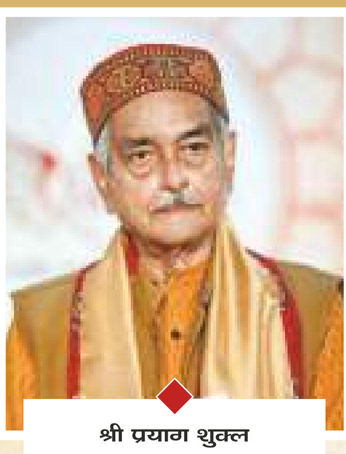

श्री प्रयाग शुक्ल

श्री अशोक भौमिक

श्री रविन्द्र त्रिपाठी

श्री विनोद भारद्वाज

श्री सुदीप सोहनी

हबीब तनवीर के गीतों की सांगीतिक प्रस्तुति

शाम की सांस्कृतिक गतिविधियों की शुरुआत पूर्व रंग में रंग संगीत से हुई जिसकी प्रस्तुति नया थिएटर समूह के धन्नूलाल सिन्हा और उनके साथियों द्वारा दी गई। इसमें हबीब तनवीर के चर्चित नाटकों के गीतों को पारंपरिक धुनों और लोक संगीत में पिरोकर सांगीतिक अंदाज में पेश किया गया। शुरुआत चरणदास चोर फिल्म के गीत ‘आमा के डारा लहसानी सुआ बन के आजा, मैना बन के आजा...’ की प्रस्तुति से हुई। इसके बाद उन्होंने ठेहलाराम नाटक का ‘बताओ गुमनामी अच्छी है या अच्छी है नामवरी...’, बहादुर कलारिन नाटक के गीत ‘संझा बेरा जावो घुमेला डोमरी, आईसन सपना सपनाएं हो जोड़ी...’, चरणदास चोर नाटक का ‘देख तू बहनी आवत हारे चोर...’ गीत को पेश किया। कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने नाटक देख रहे नैन के गीत ‘दुनिया में नई है राजा हमर असन सुखियार...’ को छोटा नागपुर की धुन में प्रस्तुति दी। इसके बाद हिरमा की अमर कहानी नाटक के ‘जगत में मनसे दू प्रकार, एक निर्धन एक धनवान जगत में मनसे दू प्रकार...’ की सांगीतिक प्रस्तुति दी। इस दौरान धन्नुलाल सिन्हा के साथ सह गायक श्री राम चंद्र सिंह, मुख्य गायिका संगीता सिन्हा और पारुल सिंह, हारमोनियम पर अमर सिंह गंधर्व, तबला पर राम शरण वैष्ठव, ढोलक पर विनोद टेकाम, मंजीरा पर मनहरन गंधर्व, कोरस में प्रियंवदा सिन्हा, पायल सिंह, शीतल घुघे, राधिका गंधर्व, सतीश व्याम, नीरज श्याम, अनमोल श्याम, अंगद, फरोज, खिलना सिन्हा बतौर सहायक रहे।

Vishwarang Partner Countries

IRELAND | QATAR | JAPAN | KENYA | U.K. | DENMARK | BELGIUM | BANGLADESH | MAURITIUS | CHINA | LUXEMBOURG | SOUTH AFRICA | NEW ZEALAND | GERMANY | NEPAL | BELGIUM | GHANA | PORTUGAL

पूर्वा नरेश द्वारा निर्देशित नाटक

'बंदिशें'

मंच पर : अनुभव फतेहपुरिया, हर्ष खुराना, हितेश भोजराज, निवेदिता भार्गव, राजीव कुमार, मोनिका गुप्ता, श्वेता देशपांडे, कृति सक्सेना, यश खान, वरूण गुप्ता, शीतल शर्मा।
मंच परे : निर्देशक और लेखन - पूर्वा नरेश, संगीत - शुभा मुद्‌गल, लाइट - अस्मित पठारे, हारमोनियम - पूरब जगत, तबला एवं ढोलक - वरूण गुप्ता, सेट - मनीष कंसारा, शोध - शुभा मुद्‌गल, अनीश प्रधान, अतुल तिवारी, प्रियंवदा।

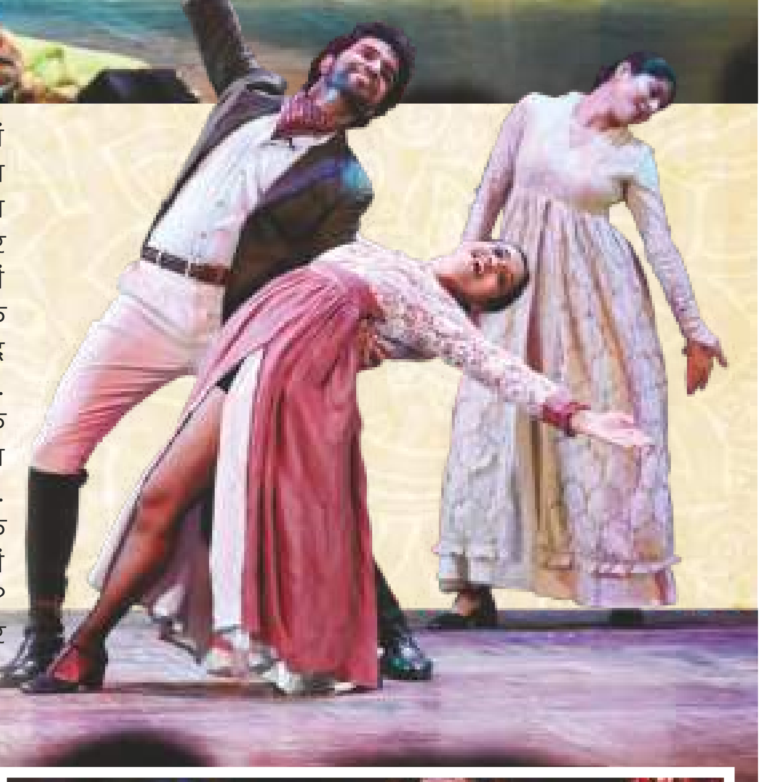

कलाकार अपने ऊपर पड़ रहे तमाम दबावों से कैसे निकले? एक कलाकार किन संघर्षों से जूझता है? कला को रोकने वाली कौन सी बंदिशें होती हैं और उनसे कैसे पार पाना है? ऐसे कुछ सवालों पर गायन कला के माध्यम से नाट्य प्रस्तुति ' बंदिशें 20 से 20,000 हर्ट्ज' अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत किया।

नाटक की शुरुआत इस प्रकरण से होती कि भारत की आजादी के सत्तर साल के मौके पर एक नेता के इलाके में एक जलसा है और उसमें कुछ गायकों और गायिकाओं को बुलाया गया है. कुछ को सम्मानित करने के लिए और कुछ को गाने के लिए. इनमें एक गायिका चंपा बाई है और दूसरी है बेनी बाई. चंपा बाई नौटंकी की गायिका रही है और बेनी बाई ऐसी तवायफ जो शास्त्रीय-उपशास्त्रीय संगीत गाती रही है. इस कार्यक्रम में इन दोंनों को गाना नहीं है. उनका सिर्फ सम्मान होना है. चंपा बाई गाना चाहती है लेकिन अधिकारी उसे रोकता है और कहता है कि पुराने दौर के लोक कलाकारों को यहां के गाने लिए नहीं बुलाया है, उनका सिर्फ सम्मान होगा और पैसे भी मिलेंगे. बेनी बाई खुद गाना नहीं चाहती क्योंकि उसने नहीं गाने की कसम बरसों पहले लेली थी.

गाने के लिए बाहर से एक गायिका मौसमी और एक गायक कबीर को बुलाया गया है. ये आधुनिक संगीतकार हैं. लेकिन कबीर के साथ मुश्किल यह पैदा हो गई है कि उसका गाना पड़ोसी मुल्क से है (पाकिस्तान का नाम नहीं लिया गया है लेकिन संकेत उसी तरफ है) और इस कारण सोशल मीडिया में उसके विरुद्ध मुहिम चल पड़ी है. अब अगर वो गाए तो प्रशासन का चौन छिन जाएगा और हंगामा भी हो सकता है. पर कबीर इसको लेकर ज्यादा परेशान नहीं है. वह नहीं गाने का दोगुना पारिश्रमिक मांगता है और ना-नुकुर के बाद प्रशासन इसके लिए तैयार हो जाता है. मौसमी के साथ कठिनाई यह है उसके गाने का ट्रैक सामान के साथ नहीं आ पाया है. इसलिए वो गा नहीं सकती. कुछ आधुनिक और लोकप्रिय गायक (या गायिका) बिना ट्रैक के गा नहीं पाते. ऐसे में कार्यक्रम कैसे हो? प्रशासन मुश्किल में है. इसी मसले पर पूरा नाटक केंद्रित है.

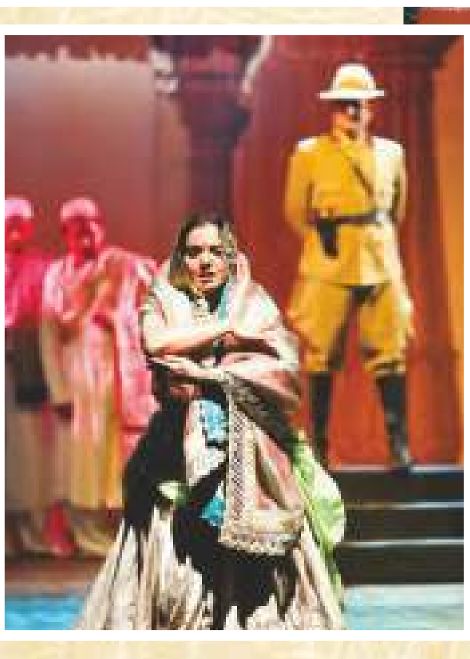

Organised by RNTU Rabindranath TAGORE UNIVERSITY

Powered By: AISECT Education. Empowerment. Enterprise. | AISECT UNIVERSITY JHARKHAND, HAZARIBAG AN AISECT GROUP UNIVERSITY | SCOPE GROUP OF INSTITUTIONS | DR. C.V. RAMAN UNIVERSITY Chhattisgarh Madhya Pradesh Bihar AN AISECT GROUP UNIVERSITY | Get.Set.Parent A Guide To New Age Parenting | Brainy Bear Pre-School & Activity Club

Organised by RNTU Rabindranath TAGORE UNIVERSITY
14-20 NOVEMBER 2022, BHOPAL(INDIA)
TAGORE INTERNATIONAL LITERATURE & ARTS FESTIVAL
विश्व रंग
भारतीय संस्कृति, वैश्विक मंच!
VOL 4: 18 NOVEMBER,2022 | PAGE 13

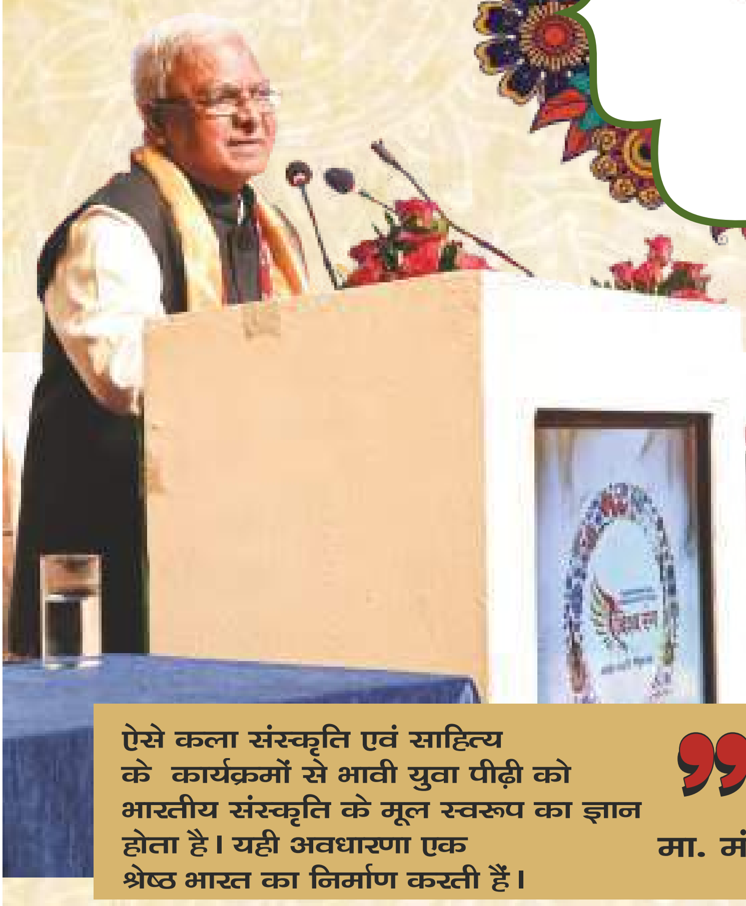

साहित्य, कला, संस्कृति के महोत्सव विश्वरंग का आग़ाज़

- राज्यपाल मा. मंगुभाई पटेल संग टैगोर यूनिवर्सिटी के चांसलर संतोष चौबे ने किया विधिवत शुभारंग
- ओम प्रकाश सकलेचा, मंत्री, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी ने भी उपस्थिति दर्ज कराई

> **ऐसे कला संस्कृति एवं साहित्य के कार्यक्रमों से भावी युवा पीढ़ी को भारतीय संस्कृति के मूल स्वरूप का ज्ञान होता है। यही अवधारणा एक श्रेष्ठ भारत का निर्माण करती हैं।**
>
> **मा. मंगुभाई पटेल**
> राज्यपाल, मध्य प्रदेश

भोपाल। साहित्य, कला और संस्कृति के सबसे बड़े महोत्सव टैगोर अंतर्राष्ट्रीय साहित्य कला महोत्सव 'विश्वरंग' का आगाज कुशाभाऊ इंटरनेशनल कनवेंशन सेंटर मिंटो हॉल परिसर में बड़ी धूमधाम से विश्व शांति और सद्भाव यात्रा के साथ हुआ। इसमें देश-विदेश के हजारों रचनाकारों, कलाकारों, साहित्यकारों ने शिरकत की। यह विश्वरंग महोत्सव का चौथा संस्करण है। उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में मध्यप्रदेश के राज्यपाल मा. मंगुभाई पटेल उपस्थित रहे, उन्होंने दीप प्रज्वलित करके महोत्सव का शुभारंभ किया। टैगोर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति और विश्व रंग के निदेशक संतोष चौबे, सह निदेशक, लीलाधर मंडलोई, मुकेश वर्मा, डॉ.सिद्धार्थ चतुर्वेदी, डॉ. अदिती चतुर्वेदी वत्स, डॉ. पल्लवी राव चतुर्वेदी, डॉ. विजय सिंह विशेष रुप से उपस्थित रहे।

उद्घाटन समारोह का संचालन टैगोर विश्व कला एवं संस्कृति केंद्र के निदेशक श्री विनय उपाध्याय ने किया। महामहिम राज्यपाल ने अपने उद्बोधन में विश्व रंग की खूबियों को बताते हुए कहा कि ऐसे कला संस्कृति एवं साहित्य के कार्यक्रमों में भावी युवा पीढ़ी को भारतीय संस्कृति के मूल स्वरूप का ज्ञान होता है। यही अवधारणा एक श्रेष्ठ भारत का निर्माण करती है। यह भाषाओं, कलाओं, और संस्कृति का अनूठा संगम है। जिससे युवाओं को परिवार के साथ साथ देश और समाज के लिए कार्य करने की प्रेरणा मिलती है। साथ ही यह भी कहा कि जनजातीय समुदाय में मौखिक परंपराओं में जड़ी बूटी से लेकर पर्यावरण अनुकूल जीवन का रहस्य छिपा हुआ है। उन्हें भी इस महोत्सव में शामिल करना एक बड़ी सफलता है। कला, कौशल, संस्कृति और ज्ञान की परम्परा के संरक्षण एवं नव सृजन के लिए समस्त विश्व रंग परिवार को साधुवाद ज्ञपित किया।

विश्व रंग के निदेशक संतोष चौबे ने कहा कि हिंदी और भारतीय भाषाओं एवं बोलियों को केंद्र में रखकर वैश्विक विमर्श करने की आवश्यकता है। विश्व रंग इस दिशा में कार्य कर रहा है। इस अवसर पर उन्होंने पुस्तक यात्रा की सार्थकता सहित विश्व रंग के विभिन्न आयोजनों की विस्तार से जानकारी दी। वहीं डॉ. पल्लवी राव चतुर्वेदी ने विश्व रंग के साथ शुरू होने वाले चिल्ड्रन फेस्टिवल के बारे में विस्तार से जानकारी दी। डॉ. सिद्धार्थ चतुर्वेदी ने विश्व रंग के अनेक रंगों को अपने वक्तव्य में समेटा और साथ ही डॉ. अदिती चतुर्वेदी ने विश्व रंग के लिये माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के शुभ संदेश पत्र का वाचन किया।

इस अवसर पर भारत सरकार के संस्कृति मंत्री माननीय श्री अर्जुन मेघवाल द्वारा विश्व रंग की सफलता के लिए भेजे गये शुभ संदेश को भी प्रस्तुत किया गया।

बॉलीवुड बैंड और फोक सिंगर पपॉन ने विश्वरंग में संगीत प्रस्तुति दी।

विश्व शांति के लिए

कुशाभाउ इंटरनेशनल कन्वेंशन सेंटर (मिंटो हॉल) में

सद्भाव यात्रा

Vishwarang Partner Countries

INDIA | NETHERLANDS | RUSSIA | FIJI | SRI LANKA | CANADA | UKRAINE | TRINIDAD | UZBEKISTAN | SINGAPORE | AUSTRALIA | UAE | SWEDEN | U.S.A. | KAZAKHSTAN | TOBAGO | BULGARIA | SPAIN

TAGORE INTERNATIONAL LITERATURE & ARTS FESTIVAL
विश्व रंग
भारतीय संस्कृति, वैश्विक मंच!

सद्भावना यात्रा से शुरू हुआ साहित्य महोत्सव का पहला दिन

विश्व शांति और सद्भाव यात्रा से शुरू हुई साहित्य महोत्सव की पहली सुबह

साहित्य, कला, संस्कृति के महोत्सव का औपचारिक शुभारंग सद्भाव शोभा यात्रा निकालकर किया गया। इस सद्भाव यात्रा में या यूं कहें कि अदब और तहजीब के इस बेमिसाल जलसे में देशभर के कला प्रेमियों, साहित्यकारों ,फनकारों के साथ-साथ सात समंदर पार के देशों से आए कला प्रेमियों ने इस विश्व शांति सद्भावना यात्रा में हिस्सा लिया । इस अवसर पर असम के 'क्रिस्तेनि ग्रूप' द्वारा मनमोहक बिहू नृत्य प्रस्तुत किया गया ।इस बिहू नृत्य से पूरा प्रांगण नृत्यमय् हो गया। प्रेम ,शांति और सद्भावना का सन्देश लिये कारवां आगे बढ़ा।

Vishwarang Partner Countries

IRELAND QATAR JAPAN KENYA U.K. DENMARK BELGIUM BANGLADESH MAURITIUS CHINA LUXEMBOURG SOUTH AFRICA NEW ZEALAND GERMANY NEPAL BELGIUM GHANA PORTUGAL

नेशनल पेंटिंग एक्ज़ीबिशन का उद्घाटन

विश्वरंग 2022 के भव्य समारोह के अंतर्गत 17 नवंबर 2022 को कुशाभाऊ ठाकरे इंटरनेशनल कंवेशन सेंटर परिसर में नेशनल पेंटिंग एक्जीबिशन का उद्घाटन हुआ ।

भारतीय संस्कृति कला प्रधान है। चित्रकला से जीवन में नए रंग भरे जा सकते हैं। दरअसल कलाकारी की सबसे लोकप्रिय विधा चित्रकला है। एक चित्रकार अपने चित्र के माध्यम से समाज के हर पहलू को उजागर करने की कोशिश करता है, जो यह दर्शाता है कि जीवन के विकास में चित्रकारी को नजरंदाज नहीं किया जा सकता। उक्त बातें रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति विश्व रंग के निदेशक संतोष चौबे ने मिंटो हॉल में आयोजित टैगोर अंतर्राष्ट्रीय साहित्य एवं कला महोत्सव 'विश्व रंग' कार्यक्रम के दौरान गुरुवार की शाम नेशनल पेंटिंग एक्जीबिशन उद्घाटन के मौके पर बड़ी संख्या में मौजूद लोगों से मुखातिब होते हुए कही। उन्होंने कहा कि विश्व रंग के जरिए विविध कलाओं को गति देने की कोशिश रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय की ओर से जारी है, जिसमें चित्रकला भी शामिल है। इससे पूर्व गुरूवार की शाम टैगोर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति संतोष चौबे के हाथों नेशनल पेंटिंग एक्जीबिशन का उद्घाटन फीता काटकर किया। पेंटिंग एक्जीबिशन में देश भर के विभिन्न राज्यों से बड़ी संख्या में चित्रकार अपनी पेंटिंग के साथ पहुंचे और प्रदर्शनी में हिस्सा लिया। शानदार पेंटिंग के लिए पश्चिम बंगाल के युवा चित्रकार सुरभजीत मैती, रोहतक हरियाणा की ज्योति बेरवाल, जलगांव महाराष्ट्र के चरणदास जादव, मुंबई के लक्ष्मण चौहान और चंडीगढ़ के भानू श्रीवास्तव को विश्व रंग मोमेंटो देकर कुलाधिपति संतोष चौबे, विश्वरंग के सह निदेशक लीलीधर मंडलोई डॉ. सिद्धार्थ चतुर्वेदी के हाथों संयुक्त रूप से सम्मानित किया गया।

विश्वरंग में ए. रामाचंद्रन पर केंद्रित मोनोग्राफ का लोकार्पण ।

विश्व रंग के दौरान टैगोर राष्ट्रीय चित्रकला प्रदर्शनी के अवसर पर हिंदी भाषा में रचित ए. रामाचंद्रन की प्रथम मोनोग्राफ का लोकार्पण विश्व रंग के रचयिता एवं रविंद्र नाथ टैगोर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री संतोष चौबे, मोनोग्राफ के लेखक एवं प्रमुख कला समीक्षक विनोद भारद्वाज, लीलाधर मंडलोई, जय किशन जी एवं अशोक भौमिक द्वारा की गई। इस मौके पर विश्वरंग के निदेशक संतोष चौबे ने कहा कि कोविड महामारी के समय जब कला पीछे जा रही थी, उसी समय भारत के जीवित चित्रकार पर मोनोग्राफ तैयार करने की पहल की गई। जिसके अंतर्गत पहली श्रृंखला में चार मोनोग्राफ को प्रकाशित किया गया है। जिसमें प्रथम मोनोग्राफ का लोकार्पण इस शुभ बेला में किया गया है।

Vishwarang Partner Countries

INDIA | NETHERLANDS | RUSSIA | FIJI | SRI LANKA | CANADA | UKRAINE | TRINIDAD | UZBEKISTAN | SINGAPORE | AUSTRALIA | UAE | SWEDEN | U.S.A. | KAZAKHSTAN | TOBAGO | BULGARIA | SPAIN

TAGORE INTERNATIONAL LITERATURE & ARTS FESTIVAL
विश्व रंग
भारतीय संस्कृति, वैश्विक मंच!

पुस्तक प्रदर्शनी का भव्य शुभारंभ

विश्वरंग 2022 के भव्य समारोह के अंतर्गत 17 नवंबर 2022 की शाम को कुशाभाऊ ठाकरे इंटरनेशनल कंवेशन सेंटर परिसर में पुस्तक प्रदर्शनी का शुभारंभ किया गया। पुस्तक प्रदर्शनी का शुभारंभ विश्वरंग के निदेशक श्री संतोष चौबे, ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता वरिष्ठ साहित्यकार प्रतिभा राय और अन्य गणमान्य अतिथियों के द्वारा संपन्न हुआ। इस विशेष अवसर पर अतिथियों द्वारा आईसेक्ट समूह की महत्वपूर्ण पत्रिका विश्वरंग संवाद, वनमाली कथा, रंग संवाद, इलेक्ट्रॉनिकी आपके लिये, विश्वरंग 2020-21 कॉफी टेबल बुक और अन्य पत्रिका पहला अन्तरा का विमोचन किया गया। इस विशेष अवसर पर विशेष अतिथि प्रतिभा राय जी ने कहा कि सभी को पुस्तकों से प्रेम होना चाहिये और खासकर युवाओं को तो इससे जुड़ना ही चाहिये। इसी तरह के विचार अन्य अतिथियों ने भी प्रकट किए।

‘भारत के ऋषि वैज्ञानिकों की प्रदर्शनी’

Vishwarang Partner Countries

IRELAND | QATAR | JAPAN | KENYA | U.K. | DENMARK | BELGIUM | BANGLADESH | MAURITIUS | CHINA | LUXEMBOURG | SOUTH AFRICA | NEW ZEALAND | GERMANY | NEPAL | BELGIUM | GHANA | PORTUGAL

याक़ूब अली ने शहनाई

की मधुर तान के साथ विश्वरंग में समाँ बांधा

सागर से आए राष्ट्रीय शहनाई वादक हाजी मोहम्मद याक़ूब अली खान एवम् समूह ने उद्घाटन समारोह में शहनाई की मधुर तान के साथ विश्वरंग में एक अनूठा समां बांधा। मध्यप्रदेश की सरजमी सागर के रहवासी उस्ताद याक़ूब अली खान शहनाई के मकबूल फनकार हैं। याक़ूब ने विश्व रंग के साहित्य महोत्सव में अपनी शहनाई से फेमस गाने मोहे रंग दो लाल और याद पिया की आने लगी जैसे गानों को बजाया। याक़ूब ने अपनी परफॉर्मेंस से श्रेताओं कों मंत्रमुग्ध कर दिया ।

TAGORE INTERNATIONAL LITERATURE & ARTS FESTIVAL
विश्व रंग
भारतीय संस्कृति, वैश्विक मंच!

भारत के मशहूर गायक पपॉन ने विश्व रंग के साहित्य उत्सव की पहली रात को यादगार बना दिया। पपॉन ने 'एकला चोलो रे', इत्यादि गाने गाए। युवाओं की भीड़ शाम से ही दिखने लगी थी और पपॉन के आते ही उत्साह दोगुना हो गया। कार्यक्रम के तय समय तक पपॉन स्टेज पर रहे और लोग लुत्फ लेते रहे।

पपॉन द्वारा गाए गए गीत....

1. याद आ रही है... (मिथुन के फिल्म का गीत)
2. आज जाने की जिद न करो...
3. तुझे कैसे पता न चला की तू मेनू प्यार कर दा है.

Vishwarang Partner Countries

IRELAND QATAR JAPAN KENYA U.K. DENMARK BELGIUM BANGLADESH MAURITIUS CHINA LUXEMBOURG SOUTH AFRICA NEW ZEALAND GERMANY NEPAL BELGIUM GHANA PORTUGAL

पपॉन के गानों पर झूमें हजारों दर्शक

पपॉन ने अपनी आवाज से मचाया धमाल

बॉलीवुड और फोक सिंगर पपॉन ने विश्व रंग के पहले दिन अपनी आवाज से श्रोताओं को मंत्र-मुग्ध कर दिया। उन्होंने अपने परफॉर्मेस की शुरुआत रबींद्रनाथ टैगोर के लिखे गीत एकला चलो रे... गाने से किया। इसके बाद उन्होंने अपनी रुहानी आवाज से कुछ असामी गानों से दर्शकों को झुमाया और अंत में पपॉन ने अपना सबसे फेमस गाना मोह मोह के धागे... को सुनाया। फिर उनके जिएं क्यों..., बुलैया..., कौन मेरा... जैसे गानों पर हजारों दर्शक झूम उठें।

Organised by RNTU Rabindranath TAGORE UNIVERSITY

Powered By: AISECT | AISECT UNIVERSITY | SCOPE GROUP OF INSTITUTIONS | DR. C.V. RAMAN UNIVERSITY | Get.Set.Parent | Brainy Bear

पवन वर्मा भारतीय संस्कृति परंपरा एवं अद्वैतवाद पर चर्चा करते हुए साथ में विश्व रंग निदेशक संतोष चौबे ।

शिक्षा, संस्कृति और शंकराचार्य पर हुए वैचारिक सत्रों के नाम रहा

विश्व रंग 2022 के साहित्य महोत्सव का दूसरा दिन

विचारक पवन वर्मा, डॉ. विनय सहस्रबुद्धे और शिक्षाविद् डॉ. मुकुल कनिटकर ने रखे अपने विचार

भोपाल। विश्व रंग 2022 टैगोर अंतर्राष्ट्रीय साहित्य एवं कला महोत्सव का दूसरा दिन वैचारिक सत्रों के नाम रहा । इसमें दिन की शुरुआत 'भारतीय संस्कृति, परंपरा और अद्वैतवाद' विषय पर चर्चा से हुई जिसमें विचारक और लेखक पवन वर्मा ने भारतीय संस्कृति परंपरा एवं अद्वैतवाद पर चर्चा करते हुए कहा, कि वास्तव में हमें यह बात समझने की जरूरत है कि हमारे यहां विचार की परंपरा कितनी बड़ी है। लेकिन अब हम मूल जड़ों से अलग हो रहे हैं और अपने विचारों से भी अलग होते जा रहे हैं। वास्तव में हिंदू धर्म जीवन शैली है, इस जीवन शैली को समझना और उस पर जीवन जीना ही हमारा ध्येय होना चाहिए । उन्होंने आदिशंकराचार्य जी के जन्म से लेकर समाधि की समस्त यात्राओं के बारे में बड़ी बारीकी से उल्लेख करते हुए कहा कि शंकराचार्य की दृष्टि को आज विज्ञान पूर्ण रूप से भी नहीं देख पा रहा है, जो उन्होंने वर्षो पहले देख लिया था। आगे उन्होंने यह भी जानकारी दी कि अद्वैतवाद दर्शन के अलावा भी और 6 दर्शन है। जिसकी जानकारी कम लोगों को है। इस दौरान श्री संतोष चौबे ने पूछा कि ब्रह्मसूत्र क्या है। इसके जवाब में पवन वर्मा ने कहा कि ब्रह्म क्या है और ब्रह्मंड क्या है, इसके बारे में जानना ही ब्रह्मसूत्र है। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्व रंग के निदेशक श्री संतोष चौबे ने की।

विश्व के कोने-कोने में है भारत की संस्कृति, कला एवं भाषा की समझ की गूंज

द्वितीय वैचारिक सत्र का आयोजन 'भारतीय संस्कृति का वैश्विक प्रभाव' विषय पर मिंटो हॉल के मुख्य सभागार में किया गया।इस सत्र में अध्यक्ष के रूप में विश्व रंग के निदेशक संतोष चौबे तथा आभासी माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के अध्यक्ष डॉ. विनय सहस्रबुद्धे मौजूद रहे। डॉ. विनय सहस्रबुद्धे ने अपने वक्तव्य में कहा कि भारत की संस्कृति, कला एवं भाषा की समझ की गूंज विश्व के कोने-कोने में है। इसके लिए भारत की अनाक्रमणकारी नीति, पारंपरिक ज्ञान-विज्ञान एवं अनिवासी भारतीयों का वैश्विक प्रभाव प्रमुख रूप से कारक है। आज पूरा देश भारत को विश्व गुरु मान रहा है क्योंकि सभी देश अपनी समस्या का समाधान भारत देश के वैचारिक समझ में देखते हैं। संतोष चौबे ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि हम लोगों ने एक पुस्तक प्रकाशित की है जो हिंदी भाषाओं की मौजूदा स्थिति को 40 देशों में दर्शाती है। हमें पूर्ण विश्वास हैं कि इसके विस्तार पर वैश्विक स्तर पर एक समूह के रूप में हम और अच्छे से काम कर सकेंगे।

भारतीय शिक्षण मंडल के अखिल भारतीय महामंत्री श्री मुकुल कनिटकर साथ में पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी मनोज श्रीवास्तव व संतोष चौबे।

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के अध्यक्ष डॉ. विनय सहस्रबुद्धे ने आभासी माध्यम से अपने विचार व्यक्त किये।

चार स्तरों पर कार्य करती है नई शिक्षा नीति

साहित्य और कलाओं के अंतरराष्ट्रीय महोत्सव में भारतीय ज्ञान परंपरा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति विषय पर चर्चा करते हुए भारतीय शिक्षण मंडल के अखिल भारतीय महामंत्री श्री मुकुल कनिटकर ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति अपनी संरचना, पाठ, प्रविधि व उद्देश्य में भारतीयता पर आधारित है। यह शिक्षा नीति चार स्तरों पर कार्य करती है। पहला, व्यक्ति के स्तर पर- उसके सर्वांगीण विकास के लिए जिसमें कि भावना, बुद्धि, शरीर, मन व आध्यात्मिकता शामिल है। इसी तरह दूसरा सामाजिक स्तर पर है जो सामाजिक योगदान के लिए तत्पर रहे।तीसरा, राष्ट्र निर्माण में उसकी महत्वपूर्ण भूमिका हो। और चौथा, वह पर्यावरण की चिंता करते हुए विश्व कल्याण के लिए कार्य करने वाला नागरिक बने।इस दौरान सत्र में वक्ता के रूप में पूर्व वरिष्ठ आई.ए.एस. अधिकारी श्री मनोज श्रीवास्तव ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति में अंग्रेजी की ज्ञान प्रणाली का विरोध नहीं है। भारतीयता का अर्थ आत्मा को स्थापित करना है। कार्यक्रम में श्री संतोष चौबे भी उपस्थित रहे।

गेट सेट पेरेंट विद पल्लवी द्वारा आयोजित किये जा रहे चिल्ड्रंस लिटरेचर, आर्ट एंड म्यूज़िक फेस्टिवल के तीसरे संस्करण का हुआ भव्य आग़ाज़

लेखक से मिलिये

पंकज सुबीर की प्रज्ञा रोहिणी से बातचीत एवं चित्रा मुद्गल की महेश दर्पण से बातचीत

विश्व रंग के निदेशक संतोष चौबे शिक्षाविद् मुकुल कनिटकर का सम्मान करते हुए।

' सफ़ह पर आवाज़ ' के लेखक विनय उपाध्याय से संवाद करते हुए अर्पण कुमार

ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता लेखक प्रतिभा रॉय की राजेन्द्र मिश्र से बातचीत

विश्व रंग के सह-निदेशक सिद्धार्थ चतुर्वेदी ने पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी मनोज श्रीवास्तव का सम्मान किया

हरि भटनागर की अरूणाभ सौरभ से बातचीत

ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता लेखक प्रतिभा रॉय के साथ अन्य महिला लेखक एवं डॉ. विनिता चौबे

विश्व रंग में प्रवासी भारतीय रचनाकारों का हुआ सम्मान

प्रवासी हिंदी और भारतीय संस्कृति के सांस्कृतिक राजदूत हैं - सुदाम खाड़े

विश्व रंग के अंतर्गत पब्लिक रिलेशंस सोसायटी ऑफ इंडिया भोपाल द्वारा साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाले प्रवासी भारतीय रचनाकारों का सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर इटली से आये मार्को जाली ने धाराप्रवाह हिंदी में बोलते हुए कहा कि हिंदी एक ऐसी चाबी है जो भारतीय संस्कृति के अपार खजाने को जानने के सभी रास्ते खोलती है। भारत देश की गहराई को समझने के लिए हिंदी को जानना जरुरी है। मैंने अनुभव किया कि हिंदी बोलने से बहुत ज्यादा लाभ हो सकता है। वैश्विक स्तर पर व्यापार में हिंदी एवं संस्कृति के योगदान पर मैं शोध भी कर रहा हूँ।

स्वास्थ्य विभाग के आयुक्त सुदाम खाड़े ने कहा कि मैं स्वयं मध्यप्रदेश का नहीं हूँ। मैं भी प्रवासी हूँ। मध्यप्रदेश कई राज्यों का राज्य है। उन्होंने प्रवासियों को संबोधित करते हुए कहा कि आपका काम उन देशों में हमेशा रेखांकित किया जाता रहेगा। आप सभी हिंदी और भारत की संस्कृति के सांस्कृतिक राजदूत का कार्य कर रहे हैं।

विश्व रंग के निदेशक, रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति संतोष चौबे ने कहा कि विश्व रंग ने पचास से अधिक देशों के प्रवासियों को एक सूत्र में पिरोने का कार्य किया है। विश्वविद्यालय में प्रवासी भारतीय साहित्य एवं संस्कृति शोध केन्द्र की स्थापना की गई है। यहाँ प्रवासियों से संबंधित साहित्य, शोध, पुस्तकालय का कार्य प्रारंभ किया गया है। प्रवासियों की पुस्तकों के प्रकाशन का भी बड़ा कार्य प्रारंभ किया गया है।

हस्तशिल्प विकास निगम आयुक्त एवं खादी ग्रामोद्योग बोर्ड की प्रबंध निदेशक डॉ. अनुभा श्रीवास्तव ने कहा कि प्रवासी विदेश में जिस तरह हिंदी की सेवा एवं भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार कर रहे है ठीक उसी तरह वहाँ की भाषा और संस्कृति को भी आत्मसात करें। सांस्कृतिक आदान प्रदान ही हमारी विशेषता है।

इस अवसर पर प्रशस्ति-पत्र, शॉल श्रीफल प्रदान कर हिंदी की सेवा में विशेष योगदान के लिए प्रवासी भारतीय रचनाकार डॉ. सुरेन्द्र गंभीर,अमेरिका, सुश्री जय वर्मा,

ब्रिटेन, राज हीरामन जी, मॉरीशस, अनूप भार्गव, अमेरिका, रोहित कुमार हेप्पी, न्यूजीलैंड, डॉ. निलम जैन, अमेरिका, प्रगति टिपनीस , रूस, प्रो. नवीन लोहनी, चीन, डॉ. मीरा सिंह, अमेरिका, शिवांगी शुक्ला, नीदरलैंड्स, विनीता तिवारी, अमेरिका, विवेकमणि त्रिपाठी, चीन, रितु शर्मा, नीदरलैंड्स, विनोद दुबे, सिंगापुर, मनीष पांडे, लक्समबर्ग को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर प्रवासी संसार पत्रिका के संपादक राकेश पाण्डेय, दिल्ली, को भी सम्मानित किया गया।

सम्मान समारोह के संयोजक पुष्पेन्द्र पाल सिंह, अध्यक्ष, पब्लिक रिलेशंस सोसायटी ऑफ इंडिया, भोपाल ने सभी प्रवासी रचनाकारों का स्वागत किया।

सम्मान समारोह का संचालन डॉ. जवाहर कर्नावट, सलाहकार, प्रवासी भारतीय साहित्य एवं संस्कृति शोध केन्द्र, रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्व विद्यालय द्वारा किया गया।

TAGORE INTERNATIONAL LITERATURE & ARTS FESTIVAL
विश्व रंग
भारतीय संस्कृति, वैश्विक मंच!

CHILDREN'S LITERATURE, ART & MUSIC FESTIVAL
विश्व रंग
18th-20th Nov, 2022

Presents

Get.Set.Parent™
A Guide To New Age Parenting

गेट सेट पेरेंट द्वारा

आयोजित किए जा रहे चिल्ड्रंस लिटरेचर, आर्ट एंड म्यूजिक फेस्टिवल के तीसरे संस्करण का हुआ

भव्य शुभारंभ

बच्चों ने इंजॉय किया डूडल सेशन

भोपाल। बाल साहित्य एवं कला के देश के सबसे बड़े महोत्सव गेट सेट पेरेंट पल्लवी चिल्ड्रंस लिटरेंचर, आर्ट एंड म्यूजिक फेस्टिवल का भव्य आगाज शुक्रवार को भोपाल के कुशाभाऊ ठाकरे-इंटरनेशनल कंवेंशन सेंटर (मिंटो हॉल) में किया गया। यह महोत्सव गेट सेंट पेरेंट विद पल्लवी द्वारा विश्वरंग के सहआयोजन में 18 से 20 नवंबर तक होगा। गेट सेट पेरेंट चिल्ड्रंस फेस्टिवल का उद्घाटन खादी ग्रामोद्योग की कमिश्नर अनुभा श्रीवास्तव और गेट सेट पेरेंट की डायरेक्टर और फॉउंडर डॉ. पल्लवी रॉव चतुर्वेदी ने किया। फेस्टिवल की शुरुआत में बच्चों का गर्मजोशी से स्वागत किया गया। अब तीन दिनों तक प्रत्येक दिन बच्चों के लिए स्टोरी टेलिंग, थिएटर वर्कशाप, फोक आर्ट, पपेट मेकिंग, मीट द ऑथर जैसे सेशन का आयोजन किया जाएगा जिसमें बड़ी संख्या में बच्चों की प्रतिभागिता हो रही है।

विक्रम श्रीधर ने मस्ती भरे अंदाज में सिखाई स्टोरी टेलिंग गेट सेज पैरेंट में विक्रम श्रीधर की स्टोरीटेलिंग सेशन रहा। इसमें भोपाल के अनेक विद्यालय के नन्हें बच्चे शामिल हुए। इस दौरान स्टोरी टेलिंग पर विक्रम श्रीधर ने बच्चों का सेशन लिया। इस कार्यशाला में बच्चों को मजाकिया अंदाज में बच्चों को शरीर के अंग कौए के रंग, आकर और वो कैसे उड़ता है, यह सारी जानकारी अपनी कार्यशाला में दी। उन्होने मैगी, सैंडविच आदि के उदाहरण देते हुए बच्चों को रंगों के बारे में सिखाया। बच्चे स्कूल में कैसे व्यवहार करें यह भी उन्होंने बच्चों को सिखाया। उनकी यह कार्यशाला अनोखे और मजाकिया अंदाज में रही। जिसमें उन्होने बच्चों को अपने साथ जोड़ा। श्रीधर ने मिमिक्र और फिर कॉमेडी भरा गायन किया, जिसमें बच्चों ने भी उनके साथ सहभागिता की।

पढ़ने की आदत कैसे पैदा करें पैनल डिसकशन में 'गेट सेट पेरेंट' की संस्थापक डॉ. पल्लवी राव चतुर्वेदी, अमर चित्र कथा की सीईओ प्रीति व्यास एवं कराडी टेल्स में प्रकाशन निदेशक शोभा विश्वनाथन उपस्थित रहीं।

Vishwarang Partner Countries

IRELAND, QATAR, JAPAN, KENYA, U.K., DENMARK, BELGIUM, BANGLADESH, MAURITIUS, CHINA, LUXEMBOURG, SOUTH AFRICA, NEW ZEALAND, GERMANY, NEPAL, BELGIUM, GHANA, PORTUGAL

CHILDREN'S LITERATURE, ART & MUSIC FESTIVAL
विश्व रंग
18th-20th Nov, 2022

Presents
Get.Set.Parent™
A Guide To New Age Parenting

हेलेन ओ ग्रेडी ने बच्चों को सिखाया थिएटर

इस दौरान हेलेन ओ ग्रेडी ग्रुप की नीलिमा गुप्ता ने बच्चों को ड्रामा के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बच्चों को अपने हावभाव, बातें कहने की कला सिखाई। उन्होंने बच्चों को मंच पर बुलाकर उनके शरीर को लेकर जागरूक किया। साथ ही बच्चों को उनके पसंदीदा जानवरों की नकल कराई, जिससे कि वे रंगमंच पर उनका सही उपयोग कर सकें।

सवाल जवाब में बच्चों को मिले उपहार

तीसरी कार्यशाला में अमर चित्र कथा की सीईओ प्रीति व्यास ने बच्चों को कहानी सुनाई। शुरुआत में प्रीति व्यास का स्वागत करते हुए पल्लवी राव चतुर्वेदी ने शॉल एवं पुष्प भेंट किया। इस कार्यशाला में उन्होने बच्चों को भगवान गणेश, कुबेर और स्वतंत्रता संग्राम सेनानी झलकारी बाई की वीरता की कहानी सुनाई। जिसके बाद उन्होने बच्चों को कहानी सुनाकर बच्चों से सवाल किए, जिनके जवाब देने वाले बच्चों को कॉमिक बुक दी।

हमारा घर है सबसे अच्छा

नाटकीय कहानी पर विक्रम श्रीधर ने बात की। उन्होंने अपनी बात की शुरुआत करते हुए बच्चों को राज्यों की सामान्य जानकारी दी। उन्होंने अपनी कहानी में बच्चों को छोटी-बड़ी चिड़िया बहनों की कहानी सुनाई। उन्होने चिड़िया की दिनचर्या पर प्रकाश डालते हुये चिड़िया के पेड़ पर खेलने, उनके आपस में खाना खाने सहित अन्य गतिविधियों पर विस्तृत चर्चा की। अपनी पूरी कहानी में उन्होने अपने मजाकिया अंदाज में सुनाया जिसका बच्चों ने खूब आनंद उठाया। इस कहानी में उन्होंने बच्चों तक संदेश पहुंचाया कि हमारा घर सबसे अच्छा रहता है।

TAGORE INTERNATIONAL LITERATURE & ARTS FESTIVAL
विश्व रंग
भारतीय संस्कृति, वैश्विक मंच!

बच्चों ने इंजॉय किया

डूडल सेशन

कडमाड डिजाइन्स के मंदार सेते और कविता डिचोलकर ने बच्चों के लिए डूडलिंग सेशन कंडक्ट किया । सेशन में करीब 150 बच्चों ने हिस्सा लिया, सभी बच्चे संस्कार वैली के स्टूडेंट्स थे । मेंटर कविता डिचोलकर ने बताया कि डूडलिंग कला की स्वतंत्र अभिव्यक्ति है, ये एक ऐसा आर्ट है जिसमें स्केल का इस्तेमाल नही होता, ये आमतौर पर फ्री स्टाइल आर्ट माना जाता है जो शरीर और दिमाग को एक्टिव (सक्रिय) बनाता है । पहला सेशन 15 मिनट का वार्मअप सेशन था जिसमें मेंटर ने डूडलिंग के बेसिक्स और आर्ट पैटर्न बच्चों को सिखाएं, दूसरे सेशन में मेंटर ने बच्चों को डूडलिंग के मदद से अलग अलग आकृतियां जैसे पहाड़, इंद्रधनुष, पिज्जा बनाना सिखाया । सेशन करीब 45 मिनट का था जिसमें बच्चों का प्रोत्साहित करने के लिए टीचर्स ने भी इस सेशन में हिस्सा लिया।

Vishwarang Partner Countries

IRELAND | QATAR | JAPAN | KENYA | U.K. | DENMARK | BELGIUM | BANGLADESH | MAURITIUS | CHINA | LUXEMBOURG | SOUTH AFRICA | NEW ZEALAND | GERMANY | NEPAL | BELGIUM | GHANA | PORTUGAL

CHILDREN'S LITERATURE, ART & MUSIC FESTIVAL

विश्व रंग

18th-20th Nov, 2022

Presents

Get.Set.Parent™

A Guide To New Age Parenting

Vishwarang Partner Countries

INDIA NETHERLANDS RUSSIA FIJI SRI LANKA CANADA UKRAINE TRINIDAD UZBEKISTAN SINGAPORE AUSTRALIA UAE SWEDEN U.S.A. KAZAKHSTAN TOBAGO BULGARIA SPAIN

समानांतर सत्रों में दिखा साहित्य का समंदर

समानांतर सत्रों की शुरुआत में 'कथेतर गद्य : नयी संभावनाएं' पर बात करते हुए अनिरुद्ध उमट ने संस्मरण का वाचन किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता ओम थानवी ने की। साथ मे बतौर वक्ता शरद कोकास भी उपस्थित रहे।

'लेखक से मिलिये' कार्यक्रम में सक्रिय हस्ताक्षर युवा कथाकार चंदन पांडे और मो. आरिफ से रचना प्रक्रिया पर बातचीत की। इस दौरान चंदन पांडे ने कहा कि किसी भी लेखक के लिये सबसे जरूरी खोज रहती है कि जो चल रहा होता है उसमे खुद को अलग से कैसे आइडेंटिफाई करें। साथ ही मो. आरिफ ने अपनी कहानी 'दिल पत्थर' पर बात करते हुए कहा कि हर समाज में अलग-अलग समूहों के बीच फ्रिक्शन बना ही रहता है।

विश्व कविता, भारतीय स्त्री लेखन : विश्व दृष्टि, चित्रकला- चित्र और चित्रण, अनुवाद का अंतः राग, कथेतर गद्य : नयी संभावनाएं, हिंदी-उर्दू प्रेम कविताएं, राजनीति, कहानियां और साहित्य, विश्व रंग की विश्वदृष्टि और पत्रिकाएं एवं लेखक से मिलिए सत्रों का आयोजन हुआ।

मंगलाचरण में बाँसुरी की धुन पर हुए सभी मंत्रमुग्ध

पहले दिन की शुरुआत इंदौर से पधारे संतोष संत और उनके द्वारा स्थापित स्वर वेणु गुरुकुल के योग्य शिष्यों के सामूहिक बांसुरी वादन से हुई। संतोष संत ने राग 'मंगल भैरव' में बनाई अपनी स्वर रचना की सामूहिक प्रस्तुति से मंगलाचरण की बेला को एक दिव्य अनुभूति प्रदान की।

कथेतर गद्य : नयी संभावनाएं पर बात करते हुए ओम थानवी

हिंदी-उर्दू प्रेम कविताएं : पर बात करते हुए बलराम गुमास्ता

राजनीति, कहानियां और साहित्य : नवीन चौधरी की विकास अवस्थी से बातचीत

लेखक से मिलिए : ममता कालिया की शंपा शाह से बातचीत

भारतीय स्त्री लेखन : विश्वदृष्टि विषय पर बोलते हुए प्रज्ञा रावत

विश्व रंग की विश्वदृष्टि और पत्रिकाएं विषय पर चर्चारत विशेषज्ञ

विश्व कविता सत्र' में भाग लेते संतोष चौबे (भारत), वेदिम तेरेखिम (रूस), मोएज माजिद (ट्यूनीशिया), नेरिसा ग्वेवारा (फिलीपींस), ए.जे. थॉमस, ऋतुराज एवं समीना अली सिद्दीकी (भारत)

Vishwarang Partner Countries

IRELAND QATAR JAPAN KENYA U.K. DENMARK BELGIUM BANGLADESH MAURITIUS CHINA LUXEMBOURG SOUTH AFRICA NEW ZEALAND GERMANY NEPAL BELGIUM GHANA PORTUGAL

विश्व रंग 2022 के तहत दोआब का कविता पाठ और मुशायरे का हुआ आयोजन

भोपाल। कुशाभाऊ ठाकरे परिसर में आयोजित विश्व रंग में शुक्रवार की शाम दोआब का कविता पाठ और अंतरराष्ट्रीय मुशायरा से सराबोर रही। गुलाबी ठंड में हिंदी, उर्दू, गीत, गजल और कविता पाठ से शाम इठलाती नजर आई। इस दौरान देश के बड़े विख्यात कवि शायरों, रचनाकारों ने अपनी प्रस्तुति दी, और लोग वाह वाह करते नजर आए। हजारों श्रेताओं की तालियों की गड़गड़ाहट ने शाम को यादगार बना दिया। इस अवसर पर कार्यक्रम के अध्यक्षता शीन काफ निजाम ने की। रहमान मुसव्विर ने कहा 'कभी बाहर नहीं आती हमेशा पर्दे में रहती है, हमारी बेटी बुलबुल है हमेशा पिजड़े में रहती है...'। ओम निश्चल ने अपनी रचना पढ़ते हुए 'मुझमें नादानियां बची हैं अभी, कुछ किलकारियां बची हैं अभी, फूल होंगे तुम्हारे बंगले में, मुझ में क्यारियां बची हैं अभी ...', 'उनको बहती हुई नदियां नहीं अच्छी लगती, मुस्कुराती हुई कलियां अच्छी नहीं लगती...', 'बचाकर रख लो बचपन भी बेच डालेगा, दीवारों दर और आंगन भी बेच डालेगा...'

इसके बाद आलोक श्रीवास्तव ने 'एक नींद के ख्वाब में रखे हुए हैं हम, याने किसी के ख्वाब में रखे हुए हैं हम, सीने पर रख कर सोती है जिसको वो रात भर अपनी, उसी किताब में रखे हुए हैं हम...को पढ़ा। इस अवसर पर बद्र वास्ती ने कार्यक्रम का संचालन किया।

कांग्रेस विधायक कुणाल चौधरी, ओमकार मरकाम और मशहुर शायर शीन-काफ़ निज़ाम का सम्मान करते हुए सिद्धार्थ चतुर्वेदी एवं नुसरत मेंहदी का सम्मान करते हुए अदिती चतुर्वेदी वत्स

Organised by RNTU Rabindranath TAGORE UNIVERSITY

Powered By: AISECT | AISECT UNIVERSITY JHARKHAND, HAZARIBAG | SCOPE GROUP OF INSTITUTIONS | DR. C.V. RAMAN UNIVERSITY | Get.Set.Parent | Brainy Bear

युवा गायिका मैथिली ठाकुर के लोकगीतों से गुंजायमान हुआ विश्व रंग

मधुर भजनों और लोकगीतों से सराबोर हुए हजारों श्रेता गायिका मैथिली ठाकुर ने विश्व रंग में दी शानदार प्रस्तुति

विश्व रंग के मंच पर फिल्म एक्टर मनोज पाहवा को डॉ. अदिती चतुर्वेदी ने सम्मानित किया।

रामलीला में लक्ष्मण के किरदार ने दिलाई पहचान और बनाया एक्टर...

विश्व रंग में पहुंचे फिल्म एक्टर मनोज पाहवा ने अनुभव साझा करते हुए रंगमंच और सिनेमा पर की बात

भोपाल। टैगोर अंतर्राष्ट्रीय साहित्य एवम् कला महोत्सव, विश्व रंग का छठवाँ दिवस रंगमंच, सिनेमा, युद्ध और निर्वासन जैसे विषयों के नाम रहा। इस दौरान फिल्म अभिनेता मनोज पाहवा 'रंगमंच और सिनेमा' विषय पर आयोजित एक प्रमुख सत्र में शामिल हुए। यहां इला जोशी ने उनकी रंगमंच यात्रा को जाना, जिसमें मनोज पाहवा ने बताया किस प्रकार रामलीला में लक्ष्मण के किरदार ने उन्हें मोहल्ले में पहचान दी और फिर थिएटर के करीब ले आया। वहीं रंगमंच से सिनेमा तक की यात्रा और फिर रंगमंच से जुड़ाव पर मनोज पाहवा बताते हैं कि मुंबई जाने से पहले उनकी शादी हो चुकी थी और बच्चे भी थे। सर्वाइव करना था, सो कॉमेडी किरदार करने लगा और कई सीरियल्स में एक्टिंग की। मुंबई शिफ्ट होने के बाद रंगमंच के स्टेज पर नहीं चढ़ा था। रंगमंच भूल गया था लेकिन जब नसीरूद्दीन शाह मिले तो उन्होंने मुझे रंगमंच करने की सलाह दी। मैं उस समय रंगमंच को लेकर गंभीर नहीं था लेकिन नसीर साहब ने मुझे एक दिन स्क्रिप्ट लाकर दी तो दोबारा रंगमंच से जुड़ गया। वहीं सुश्री इला ने मनोज पाहवा से फिल्म के अलग-अलग फॉर्मेट पर चर्चा की। जिसमें मनोज पाहवा ने बताया कि उन्होंने एड-फिल्म, फिल्म, वेब सीरीज़ के साथ कई अलग-अलग फिल्मों के फॉर्मेट में काम किया। काम करते- करते कई लोगों से सीखने का मौका मिला। तकनीक पर ध्यान देता गया और आज हर फॉर्मेट पर काम करता हूँ।

विश्व रंग में फिल्म एक्टर मनोज पाहवा ने रंगमंच और सिनेमा के अनुभव साझा करते हुए ईला जोशी से अपनी रंगमंच यात्रा पर चर्चा की।

मंगलाचरण में महादेवी वर्मा की रचना की हुई प्रस्तुति

इससे पहले विश्व रंग के छंठवे दिन की शुरुआत परम्परानुसार मंगलाचरण से हुई। भक्ति के स्वर में युवा ध्रुपद गायिका धानी गुंदेचा और जान्हवी ने मिलकर छायावाद की अप्रतिम कवियत्री महादेवी वर्मा की रचना 'यह मन्दिर का दीप इसे नीरव जलने दो और तुलसीदास की रचना 'चित्रकूट अति विचित्र' सुबह की सभा की आध्यात्मिक चेतना प्रदान की। पखावज पर निखिल चोपड़ा और ज्ञानेश्वर ने संगत दी।

विश्व रंग के छठवें दिन की शुरूआत ध्रुपद गायिका धानी गुन्देचा और जान्हवी के मंगलाचरण से हुई

नये सिरे से है इतिहास लेखन की आवश्यकता: अरविंद मोहन

''इतिहास को पश्चिमी नजरिये से मुक्त होना चाहिये। आज बहुत सारे ऐसे विषय हैं जिस पर नये सिरे से इतिहास लेखन की आवश्यकता है। लेकिन इतिहास लेखन के लिए यह बेहद जरूरत है कि हम यूरोप बनाम हिन्दुस्तान, अगड़े बनाम पिछड़े जैसी सोच से मुक्त होकर निष्पक्ष भाव से उसे लिखें।'' ये उद्‌गार प्रसिद्ध पत्रकार, लेखक, अनुवादक अरविंद मोहन ने विश्व रंग के अंतर्गत आयोजित सत्र 'सृजनात्मक इतिहास लेखन की जरूरत' विषय पर अध्यक्षता करते हुए व्यक्त किये। सत्र में अपने विचार रखते हुए अन्य अतिथियों में हितेन्द्र पटेल जी ने कहा कि इतिहास को पुनः निर्भीकता से लिखा जाना चाहिये। श्योराज सिंह बैचेन ने दलितों, स्त्रियों, आदिवासियों के इतिहास लेखन पर बल दिया। देवेन्द्र चौबे जी ने कहा कि इतिहास लिखने के साथ इतिहास कैसे लिखा जाता है, यह भी देखा जाना चाहिये।

बिना घोषणा के अपना 'प्रतिशोध ले रही है प्रकृति

नंदकिशोर आचार्य

अग्नि शेखर

नौमान शौक

अच्युतानंद मिश्रा

मनोहर बाथम

अनुप सैठी

प्रथम वैचारिक सत्र में 'युद्ध और निर्वासन : विश्व परिप्रेक्ष्य' विषय पर संवाद संपन्न हुआ। सत्र के प्रमुख वक्ताओं में साहित्य अकादमी सम्मान से सम्मानित नंदकिशोर आचार्य, अग्निशेखर, नोमान शौक, अनूप सेठी और मनोहर बाथम शामिल रहें, वहीं कार्यक्रम की अध्यक्षता अच्युतानंद मिश्र ने की। सत्र का संचालन कुमार अनुपम ने किया। इस दौरान वक्ता नंद कुमार आचार्य ने अपने उद्‌बोधन में युद्ध को प्रकृति से जोड़ते हुए कहा कि जिस तरह से मानव प्रकृति को नष्ट कर रहा है उसी तरह एक दिन प्रकृति भी मनुष्य को नष्ट कर देगी। और प्रकृति बिना घोषणा के अपना प्रतिशोध ले रही है। यह मानव के खिलाफ प्रतियुद्ध है। अच्युतानंद मिश्र ने अपने वक्तव्य में कहा कि दुनियां का कोई भी युद्ध मनुष्यता के खिलाफ ही लड़ा जाता है। वहीं, साहित्यकार अग्निशेखर निर्वासन को लेकर कहते हैं, 'लिख लो, मेरा पता भी खो गया है। क्योंकि निर्वासन एक पता खोना ही तो है...'। वहीं नोमान शौक ने जीशान साहिल के एक नज़्म कहते हुए कहा, 'जंग के दिनों में मुहब्बत आसान हो जाती है और जिंदगी मुश्किल। सत्र में विश्वरंग संवाद त्रैमासिक पत्रिका का लोकार्पण भी किया।

डॉक्टर तभी मरीज का दर्द समझता है, जब वह कविता जीता है : डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी

'पोएट्री थैरेपी'' कार्यक्रम की अध्यक्षता हिंदी साहित्य के मूर्धन्य विद्वान और साहित्यकार, डॉ ज्ञान चतुर्वेदी ने की। उनके साथ पोएट्री थैरेपी पर बातचीत करने के लिये डॉ. विनय कुमार मंच पर मौजूद रहे। यह सत्र पूरी तरह कविताओं और उनकी जीवन में चिकित्सीय भूमिका पर केन्द्रित था। ज्ञान चतुर्वेदी ने थैरेपी पर बात करते हुए कहा कि चिकित्सा के क्षेत्र में कविता या काव्य की उल्लेखनीय भूमिका है। एक डॉक्टर तभी मरीज का दर्द समझता है, जब वह कविता जीता हो।

शिक्षा और रंगमंच पर हुआ सार्थक संवाद रंगमंच जीवन की शिक्षा है

एक महत्वपूर्ण सत्र 'शिक्षा और रंगमंच' पर भी संपन्न हुआ। सत्र में मध्यप्रदेश नाट्य विद्यालय के पूर्व निदेशक संजय उपध्याय, फिल्म कला निर्देशक जयंत देशमुख, टैगोर राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के निदेशक मनोज नायर और मशहूर रंग कर्मी और अभिनेता आलोक चटर्जी मौजूद थे। नायर ने इस दौरान अपनी रंग कर्म के शुरुआती दौर को याद करते हुए कहा कि रंगमंच अपने आप में शिक्षा ही है। यह जीवन की शिक्षा है। सत्र में बातचीत के दौरान आलोक चटर्जी ने कहा कि रंगकर्मी को अपना बौद्धिक विकास भी निरंतर करते रहना चाहिए अन्यथा सब व्यर्थ है। संजय ने कहा कि रंगमंच की शिक्षा मनुष्य को एक इमानदार मनुष्य

बनाती है। देशमुख ने बच्चों को कविता और कहानी सुनाते रहना चहिए।साहित्य से परिचय बच्चों को बचपन में ही करा दिया जाना चाहिए।

प्रवासी भारतीय रचनाकारों ने किया कविता पाठ

प्रवासी साहित्य (1) कविता पाठ सत्र में ब्रिटेन के जय वर्मा ने अपनी रचना 'चल निकल चलें तेरे गुलिस्तां से, कौन जानता है कि राह किधर ले जाए...', न्यूजीलैंड के रोहित सिंह हैप्पी ने 'उसने जन्म दिया मुझे, उसने जीवनदान, दो माओं का लाल मैं ये मेरी पहचान...' का पाठ किया। इसके बाद शिवांगी शुक्ला ने 'खिड़की पर बैठी हूं मन को समझाकर, बाबा दफ्तर से जल्दी मैं घर आकर जोड़ रही हूं बीती सारी कड़ियां...' का पाठ किया। नीदरलैंड के रामा तक्षक ने शिकायत पाती शीर्षक से 'शिकायत न करो अब कुछ तो समझो, तुम मेरी खामोशी के अंधेरों में और न घसीटों...' का पाठ किया। वहीं, अमेरिका के अनूप भार्गव, अनिल जोशी, अमेरिका की विनिता तिवारी और सिंगापुर के विनोद दुबे ने भी रचना पाठ किया।

प्रवासी साहित्य सत्र में हुआ गद्य रचना पाठ

सत्र की पहली वक्ता के रूप में बोलते हुए नीदरलैंड की ऋतु शर्मा ने एक कविता से अपनी बात शुरू की, बाद में एक कहानी का अंश पाठ किया जिसमें एक छोटी लड़की के कुत्ते के खोने का वर्णन है। रूस से आई श्रीमती प्रगति टिपणीस ने एक आलेख प्रस्तुत किया जिसमें उन्होंने रूस में हिंदी अनुवाद, हिंदी भाषा और संस्कृति की सिथति आदि पर प्रकाश डाला।लक्जमबर्ग से आए मनीष पांडे ने आपबीती के अंदाज में विदेश के अपने अनुभव और एहसास साझा किये।इसके अलावा सत्र में अमेरिका से मीरा सिंह, चीन के विवेक मणि त्रिपाठी, अमेरिका निवासी डॉ. नीलम जैन शामिल रहे। सत्र के अध्यक्ष सुरेन्द्र गंभीर ने अमेरिका हिंदी के शिक्षण - प्रशिक्षण तथा शोध और वहां होने वाले कार्यक्रमों पर रोशनी डाली।

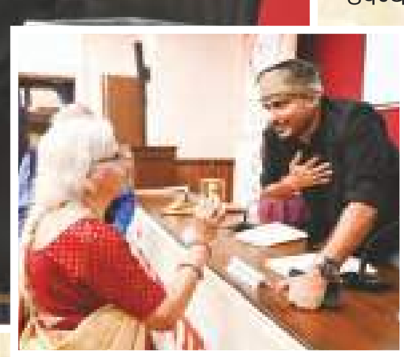

एक बरगद के पेड़ के समान है लेखन

'विश्व रंग' में चल रही सत्रों की श्रृंखला आज ग्रामीण भारत की उभरती प्रतिभा को तलाशते निलोत्पल मृणाल तक जा पहुंची। झारखंड में जन्मे इस युवा लेखक, कवि, स्तंभकार, ब्लॉगर एवं सामाजिक -राजनीतिक एक्टिविस्ट एक गांव की उभरती प्रतिभा को स्वतः रेखांकित करता हैद्य इस परिचर्चा का संचालन विश्व रंग के प्लानिंग निदेशक नितिन वत्स द्वारा किया गयाद्य मुख्य रूप से निलोत्पल मृणाल द्वारा रचित उपन्यास 'दि डार्क हॉर्स', 'अघौड़' एवं 'यार जादूगर' की बात की गई उन्होंने कहा कि लेखन एक बरगद के पेड़ के समान है जिसका आकलन 10 साल बाद लगाया जा सकता है तथा आलोचना आलोचक को आज के परिचय के हिसाब से ही करना चाहिए, जिससे की एक लेखक को लेखक बने रहने में सहजता महसूस होगी उन्होंने युवा पीढ़ी से अपील की 'एक लेखक की पुस्तक पढ़ें जरूर लेकिन साथ ही एक लेखक को लेखक बने रहने के लिए प्रोत्साहित भी करें।

Get.Set.Parent™
A Guide To New Age Parenting
Presents
CHILDREN'S LITERATURE, ART & MUSIC FESTIVAL
विश्व रंग
18th-20th Nov, 2022

अच्छे व्यक्ति बनने की सीख से शुरु हुआ

गेट सेट पेरेंट के चिल्ड्रेन फेस्टिवल का दूसरा दिन

भोपाल। देश के सबसे बड़े बाल साहित्य एवं कला महोत्सव गेट सेट पेरेंट विद् पल्लवी चिल्ड्रंस लिटरेंचर, आर्ट एंड म्यूजिक फेस्टिवल के दूसरे दिन की शुरूआत अतिथि नेहरू युवा केन्द्र के उप निदेशक सुरेंद्र शुक्ला द्वारा रंग बिरंगे गुब्बारे आसमान में छोड़कर हुआ। इस दौरान शोभा विश्वनाथ, प्रकाशन निदेशक कराडी टेल्स, मोनिका सैंटोस, पेशेवर मसख़रा, विक्रम श्रीधर, संवादात्मक कहानीकार, कविता डिचोलकर और मंदार शेटे, कदमद डिजाइन, नीलिमा गुप्ता, हेलेन ओ ग्रेडी इंटरनेशनल आदि उपस्थित रहे। डॉ. पल्लवी राव चतुर्वेदी ने अतिथि को यहां चल रहे विभिन्न कार्यक्रमों से परिचित कराया। साथ ही कार्यक्रम में आये बच्चों का स्वागत किया। यह महोत्सव गेट सेंट पेरेंट विद पल्लवी द्वारा विश्वरंग के सहआयोजन में 20 नवंबर तक होगा। वहीं कार्यक्रम को संबोधित करते हुए अतिथि शुक्ला ने उपस्थित बच्चों को अपने जीवन की संघर्ष की कहानी सुनाई। उनहोने सभी बच्चों से ज़िद और जुनून से पढ़कर अच्छा व्यक्ति बनने की बात कही।

नेहरु युवा केन्द्र के उपनिदेशक सुरेन्द्र शुक्ला ने बच्चों को अपने जीवन की संघर्ष कहानी सुनाई

Vishwarang Partner Countries

INDIA | NETHERLANDS | RUSSIA | FIJI | SRI LANKA | CANADA | UKRAINE | TRINIDAD | UZBEKISTAN | SINGAPORE | AUSTRALIA | UAE | SWEDEN | U.S.A. | KAZAKHSTAN | TOBAGO | BULGARIA | SPAIN

TAGORE INTERNATIONAL LITERATURE & ARTS FESTIVAL
विश्व रंग
भारतीय संस्कृति, वैश्विक मंच!

मिली सूझबूझ से काम लेने की सीख

पहली कार्यशाला में कराड़ी टेल्स में प्रकाशन निदेशक शोभा विश्वनाथन ने बच्चों को शेर की भूख की कहानी सुनाई। कहानी के मध्याम से बच्चों ने सूझ

डिब्बे से सीखा खास तरीके का आर्ट

राधिका फतेहपुरिया नें रेसिन आर्ट्स वर्कशाप में बच्चों को इस कला की जानकारी दी।

राधिका फतेहपुरिया ने रेसिन आर्ट्स पर वर्कशॉप ली। बच्चों की कला को उभारने की मकसद से आयोजित इस वर्कशॉप में बच्चों के साथ-साथ उनके माता-पिता भी बहुत उत्साहित दिखे। एक डिब्बे में डिजाइन बनाते हुए बच्चों को रेसिन आर्ट्स बनाने थे। वर्कशॉप में बच्चों ने बहुत अच्छे तरीके से आर्ट को सीखा और इंजॉय भी किया।

TAGORE INTERNATIONAL LITERATURE & ARTS FESTIVAL
विश्व रंग
भारतीय संस्कृति, वैश्विक मंच!

स्पेन की सैंटोस ने कराया बच्चों को क्लाउन का एक्सपीरिएंस

स्पेन से आईं मोनिका सैंटोस द्वारा क्लाउनिंग शो किया गया। उन्होंने बच्चों को मंच पर बुलाकर कई गतिविधियां कराईं। इस दौरान उन्होंने बच्चों का खूब मनोरंजन कराया। बच्चों ने भी इस शो का बेहद आनंद उठाया।

Vishwarang Partner Countries

INDIA NETHERLANDS RUSSIA FIJI SRI LANKA CANADA UKRAINE TRINIDAD UZBEKISTAN SINGAPORE AUSTRALIA UAE SWEDEN U.S.A. KAZAKHSTAN TOBAGO BULGARIA SPAIN

TAGORE INTERNATIONAL LITERATURE & ARTS FESTIVAL
विश्व रंग
भारतीय संस्कृति, वैश्विक मंच!

Get.Set.Parent™
A Guide To New Age Parenting
Presents
CHILDREN'S LITERATURE, ART & MUSIC FESTIVAL
विश्व रंग
18th-20th Nov, 2022

आओ बच्चों नाटक खेलो

हेलेन ओ ग्रेडी इंटरनेशनल के सदस्यों का डॉ. अदिति वत्स चतुर्वेदी द्वारा स्वागत किया गया। इन सदस्यों ने थिएटर की कार्यशाला ली। जिसमें उन्होंने बच्चों को ड्रामा की विभिन्न विधाओं के बारे में बताया। साथ ही उन्हें बोलते समय हाव-भाव के माध्यम से अपनी बात रखना सिखाया। उन्होंने च्युंगम का उदाहरण देते हुए बच्चों को अपने हाव-भाव में परिवर्तन करना सिखाया।

मज़े-मज़े में सीखा कार्टून बनाना

टिंकल और अमर चित्र कथा के ग्रुप आर्ट निर्देशक सैवियो ने बच्चों को मजेदार अंदाज में कार्टून आर्ट के गुर सिखाएं। सत्र के दौरान मेंटर ने बच्चों को अलग अलग आकार जैसे त्रिकोण, गोला के मदद से कार्टून कैरेक्टर बनाना सिखाया। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि कार्टून बनाना एक ऐसी कला है जिसमे आर्टिस्ट फनी अंदाज में अपनी भावनाएं कहता है। कार्टून के इस सेशन को बच्चों ने बहुत ही बेहतरीन तरीके से अटेंड किया।

Vishwarang Partner Countries

IRELAND QATAR JAPAN KENYA U.K. DENMARK BELGIUM BANGLADESH MAURITIUS CHINA LUXEMBOURG SOUTH AFRICA NEW ZEALAND GERMANY NEPAL BELGIUM GHANA PORTUGAL

Get.Set.Parent™
A Guide To New Age Parenting
Presents
CHILDREN'S LITERATURE, ART & MUSIC FESTIVAL
विश्व रंग
18th-20th Nov, 2022

हंसी-मजाक करते हुए दिया व्यवहारिक ज्ञान

कहानियों के माध्यम से संबंध बनाने और कहानी कहने की कार्यशाला आयोजित हुई। इसमें कहानीकार विक्रम श्रीधर द्वारा बच्चों को हिंदी, अंग्रेजी एवं तमिल में अभिवादन करना सिखाया। उन्होंने जानवरों की आवाज निकालकर बच्चों के सामने इनके बारे में समझ विकसित की। उन्होंने कार्यशाला में बच्चों को मस्ती-मजाक करते हुए व्यवहारिक ज्ञान दिया।

#instakids

आर्ट से सिखाया मेडिटेशन

मेंटर उर्वी चेड्डा ने मंडला डॉट आर्ट का सेशन कंडक्ट किया। मेंटर ने बच्चों को मंडला डॉट आर्ट के गुण सिखवाए, साथ ही उन्होंने बताया कि ये आर्ट फॉर्म एक प्रकार का मेडिटेशन है जो ध्यान लगाने, रिलैक्स करने में मदद करता है। अगर आप पूरेशान हैं और मेडिटेशन करना चाहते हैं तो आप इस आर्ट को कर सकते हैं।

ऋषभ ने सिखवाई प्रकृति से निकली कला गोंड

'गोंड आर्ट' के विषय पर आयोजित वर्कशॉप में बच्चों को कोमल शर्मा और ऋषभ निगम ने बच्चों को इस कला की बारीकियां सिखवाई। इस सेशन में कई स्कूल के सैकड़ों बच्चों ने हिस्सा लिया। इस सेशन में बच्चों ने इस कला से संबंधित पैटर्न बनाना और उसे पेंट करना सीखा । गोंड आर्ट के बारे बात करते हुए मेंटर ने बताया कि ये एक प्रकार की जनजातीय कला है जिसकी शुरूआत गोंड समाज के लोगों ने की थी । आर्टिस्ट इस कला की प्रेरणा प्रति से लेते है, मौजूदा समय में इस कला के साथ आर्टिस्ट एक्सपेरिमेंट भी करने लगे हैं।

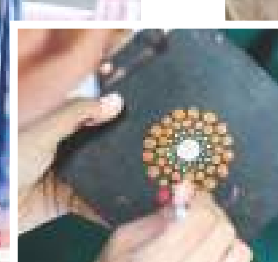

TAGORE INTERNATIONAL LITERATURE & ARTS FESTIVAL
विश्व रंग
भारतीय संस्कृति, वैश्विक मंच!
14-20 NOVEMBER 2022, BHOPAL(INDIA)

Get.Set.Parent™
A Guide To New Age Parenting
Presents
CHILDREN'S LITERATURE, ART & MUSIC FESTIVAL
विश्व रंग
18th-20th Nov, 2022

ऑरिगमी सेशन में बच्चों ने जापान का आर्ट सीखा

कागजी इंडिया के तरफ से राकेश धनक और जनक गोदारा ने जापान का मशहूर आर्ट ऑरिगामी का सेशन कंडक्ट किया। मेंटर ने बच्चों को कागज से फॉक्स (लोमड़ी) और पक्षी बनाना सिखाया, बच्चों में ऑर्ट को सीखने की ललक देखने लायक थी। मेंटर ने बताया कि ये आर्ट जापान और चीन में काफी प्रचलित है। ये धैर्य और एकाग्रता बढ़ाने में काफी मददगार है।

Vishwarang Partner Countries

IRELAND | QATAR | JAPAN | KENYA | U.K. | DENMARK | BELGIUM | BANGLADESH | MAURITIUS | CHINA | LUXEMBOURG | SOUTH AFRICA | NEW ZEALAND | GERMANY | NEPAL | BELGIUM | GHANA | PORTUGAL

समानांतर सत्रों में खानपान, ग्रामीण भारत, स्त्री विमर्श जैसे विषयों के नाम रहा विश्व रंग 2022 के साहित्य महोत्सव का तीसरा दिन

भोपाल। अंतर्राष्ट्रीय साहित्य एवं कला महोत्सव विश्ववरंग के अंतर्गत शनिवार को मिंटो हॉल में आयोजित चटकारों की चौपाल कार्यक्रम का आयोजन हुआ, जिसमें शिक्षाविद्, लेखक और व्यंजन विशेषज्ञ पद्मश्री पुष्पेश पंत कार्यक्रम में शरीक हुए। बता दें कि 11 दिसंबर 1946 में उत्तराखंड अल्मोड़ा में जन्मे पुष्पेश पंत की इंडिया रू दि कुकबुक नामक पुस्तक को न्यूयॉर्क टाइम्स ने सर्वश्रेष्ठ पुस्तक घोषित कर चुका है। शनिवार को आयोजित कार्यक्रम में ईला जोशी ने भारतीय भोजन और स्वाद का संस्कृति से जुड़ाव को लेकर कई अहम सवाल पूछे, जिसका बखुबी जवाब देते हुए पंत ने स्वाद और भोजन से जुड़ी अहम जानकारियां मौके पर मौजूद लोगों से साझा की। यह पूछे जाने पर कि हमारे आज के भोजन में पुर्वजों के द्वारा प्रयोग किए जाने वाले कितना भोजन मौजूद है, इस पर जवाब देते हुए पंत ने कहा कि भारतीय परंपरा में पौष्टिक आहार ही केंद्र में रहा है। उन्होंने कहा कि आज हम जो पौष्टिक आहार प्रयोग में लाते हैं, वह हमारे पुर्वजों की देन है। मौके पर विश्वरंग के को कोऑर्डिनेटर सिद्धार्थ चतुर्वेदी, डॉ. पल्लवी राव चतुर्वेदी समेत बड़ी संख्या में लोग मौजूद थे।

"स्त्री लेखन का समकाल" विषय पर परिचर्चा

पचास वर्ष पूर्व जब हमने पढ़ना शुरू किया और उसके बाद जब लिखना शुरू किया, तब लेखन में स्त्री-पुरुष का भेद नहीं था, जैसा आज है। कुछ विमर्श उछालने के लिए यह स्त्री विमर्श का जुमला छोड़ा गया है। जिसमें आज हम सब उलझ गए हैं। लेकिन अब यह घिस चुका है और अपनी समाप्ति की ओर है। उक्त विचार वरिष्ठ लेखिका पद्मश्री सुश्री उषा किरण खान ने स्त्री लेखन का समकाल विषय पर आयोजित परिचर्चा में अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कही। इस अवसर पर सुश्री अल्पना मिश्र ने अपने विचार रखते हुए कहा कि पूर्वाग्रह के साथ स्त्री को कैसे समझा जा सकता है। स्त्री राजनीति पर बात करती है, समाज में व्याप्त अन्य समस्याओं पर बात करती है लेकिन फिर भी जब बोलने की बात होती है तो स्त्री विमर्श जैसे विषय आकर खड़े हो जाते हैं। इस दौरान बतौर वक्ता मनीषा कुलश्रेष्ठ, सुश्री इंदिरा दांगी भी मौजूद रहीं।

भारत में स्त्री विमर्श की अवधारणा है ही नहीं

वरिष्ठ कथाकार मृदुला गर्ग का कहना है कि भारत में स्त्री विमर्श जैसा कुछ भी नहीं है। यह पाश्चात्य अवधारणा है। वह निराला सभागार में लेखकों से बातचीत के सत्र में बोल रही थीं। इस सत्र में युवा कवयित्री शीलेश रघुवंशी से युवा आलोचक अरुणेश शुक्ल ने बातचीत की। वहीं कथाकार मृदुला गर्ग से उपन्यास कार महेश कटारे ने बातचीत की। नीलेश रघुवंशी ने अपने ताजा उपन्यास 'शहर से दस किलोमीटर दूर' को केन्द्र में रखकर ही अपनी बात कही, उनका कहना था कि यह उपन्यास एक रूपक की तरह है। विकास के चक्र में स्त्री कहां है। इसकी पड़ताल करता चलता है।

मनोज कुमार पाण्डेय की श्रुती कुमुद से बातचीत..

विश्व रंग 2022 के तीसरे दिन कुशाभाऊ ठाकरे हॉल के टैगोर सभागार में 19 नवम्बर को सत्र 41 में मनोज कुमार पाण्डेय से श्रुति कुमुद ने बात की। सत्र की शुरुआत किताब शहतूत पर चर्चा से हुई जिसमें निर्दोश चरित्रों को चित्रित किया गया। बच्चों पर बात करते हुए स्कूलों में हुई पढ़ाई और उसके ढंग पर चर्चा की। कहानी पर चरित्र चित्रण कैसे करते हैं के जवाब में लेखक ने कहा बतौर लेखक हमारे इर्दगिर्द ही चित्र और चरित्र होते हैं इसलिए मैं इस विषय पर बात नहीं करता। पुराने लेखकों ने नए लेखकों की कहानियां पसंद नहीं कीं या यूँ कहा जाए कि बदलाव पसन्द नहीं किया गया। रचना प्रक्रिया पर मजाकिया अंदाज में बात करते हुए बताया जैसे समोसे की पापड़ी से आलू तक स्वाद ले कर खाया जाता है ठीक वैसे ही मेरे लिए रचना प्रक्रिया है, मैं रचनाओं को स्वाद के साथ पूरा करता हूँ।

TAGORE INTERNATIONAL LITERATURE & ARTS FESTIVAL
विश्व रंग
भारतीय संस्कृति, वैश्विक मंच!

पूर्वरंग में गणगौर

विश्वरंग में दिन भर के वैचारिक सत्रों के बाद शाम के सांस्कृतिक कार्यक्रमों की शुरुआत पूर्वरंग से हुई जिसमें गणगौर नृत्य किया गया। गणगौर निमाड़ी जन-जीवन का गीति काव्य है। चौत्र दशमी से चौत्र सुदी तृतीया तक पूरे नौ दिनों तक चलने वाले इस गणगौर उत्सव का ऐसा एक भी कार्य नहीं, जो बिना गीत के पूरा हो। गणगौर के रथ सजाये जाते हैं, रथ विसर्जित जाते हैं। इस अवसर पर गणगौर नृत्य भी किया जाता है। झालरिया दिये जाते हैं। महिला और पुरुष रनुबाई और धणियर समान रूप से रथों को सिर पर रखकर नाचते हैं। ढोल और थाली गणगौर के केन्द्रीय वाद्य होते हैं। गणगौर निमाड़ के साथ राजस्थान और मध्यप्रदेश के मालवा अंचल में भी समान रूप से लोकप्रिय है। संजय महाजन ने निमाड़ लोक अंचल के इस आनुष्ठानिक नृत्य को देश-दुनिया में लोकप्रियता प्रदान की है।

RNTU के विदेशी छात्र रजिस्ट्रार डॉ. विजय सिंह के साथ

असम के कलाकार बीहु नृत्य करते हुए

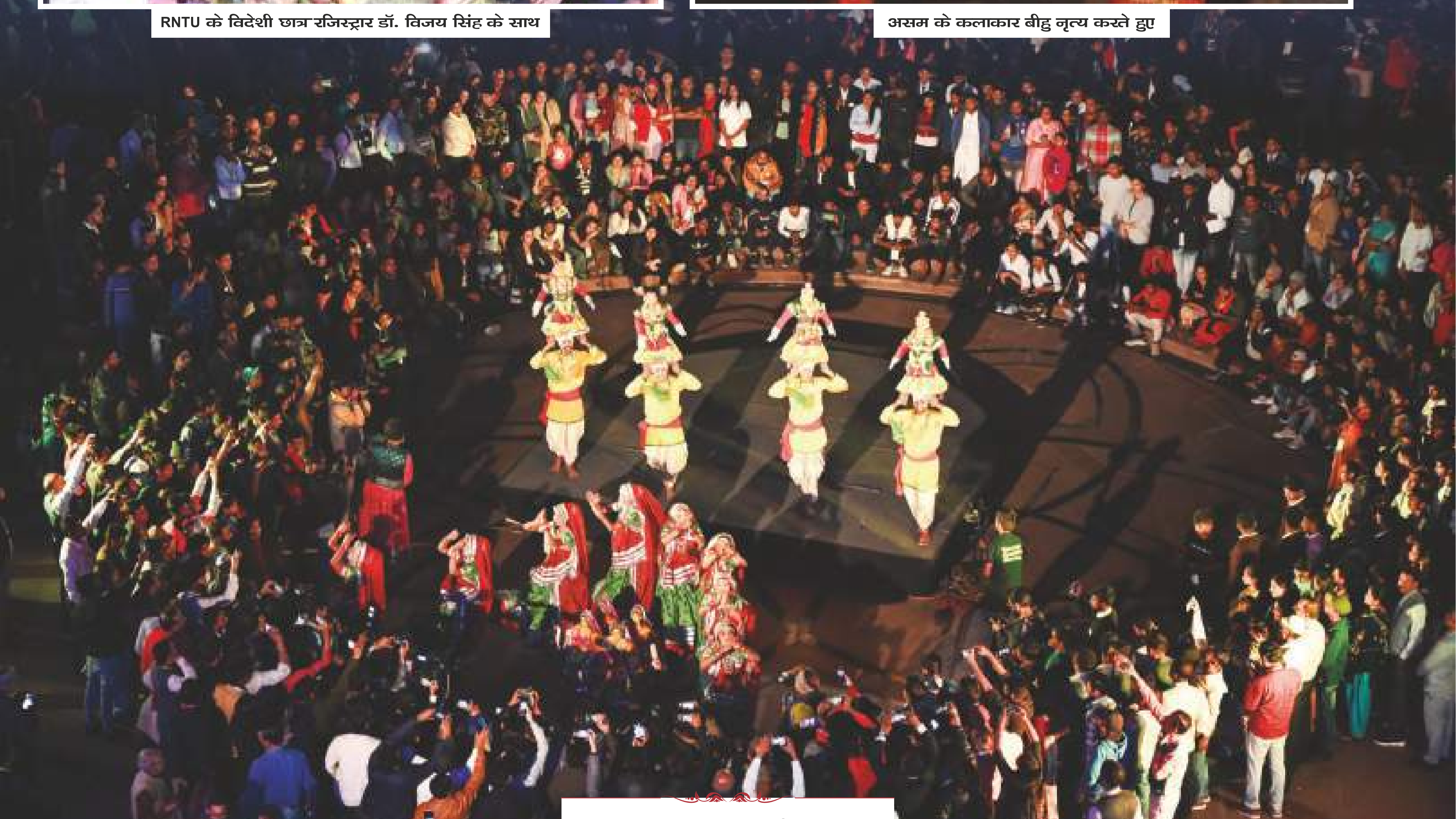

Vishwarang Partner Countries

IRELAND · QATAR · JAPAN · KENYA · U.K. · DENMARK · BELGIUM · BANGLADESH · MAURITIUS · CHINA · LUXEMBOURG · SOUTH AFRICA · NEW ZEALAND · GERMANY · NEPAL · BELGIUM · GHANA · PORTUGAL

विश्व रंग के चौथे चरण में मैथिली ठाकुर ने समा बांधा

भोपाल। लोकगीतों के गायन से लोगों के दिलों में राज करने वाली मैथिली ठाकुर ने आज विश्व रंग में अपने गीतों से हजारों श्रेताओं को सराबोर किया। एक के बाद एक भजन और लोकगीतों की प्रस्तुति से श्रोता झूमते नजर आए। मैथिली ने रागों का ऐसा समा बांधा कि विश्व रंग की शाम ऐतिहासिक बन गई। विश्व रंग में देर रात तक मैथिली ठाकुर के लोकगीतों का रंग गूंजता रहा। इसमें उन्होंने शुरुआत छाप तिलक सब छीनी मो से नैना मिलाइके... से कर हर किसी को झूमने पर मजबूर किया। इसके बाद उनकी नजरों ने कुछ ऐसा जादू किया..., तुम्हे दिल्लगी भूल जानी पड़ेगी मोहब्बत की राह में आकर तो देखो... से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया।

Organised by RNTU Rabindranath TAGORE UNIVERSITY

Powered By: AISECT | AISECT UNIVERSITY | SCOPE GROUP OF INSTITUTIONS | DR. C.V. RAMAN UNIVERSITY | Get.Set.Parent | Brainy Bear

Organised by RNTU Rabindranath TAGORE UNIVERSITY

14-20 NOVEMBER 2022, BHOPAL(INDIA)

TAGORE INTERNATIONAL LITERATURE & ARTS FESTIVAL

विश्व रंग

भारतीय संस्कृति, वैश्विक मंच!

VOL 4: 21 NOVEMBER, 2022 | PAGE 41

"21वीं सदी में भारत के विश्व गुरु बनने की राह में विश्व रंग पहला कदम..."

.... मा. डॉ. अनुसूइया उइके (राज्यपाल, छत्तीसगढ़)

शिल्पा राव के गीतों से विश्व रंग का हुआ खूबसूरत समापन

फिर मिलेंगे के वादे के साथ

विश्व रंग 2022 का हुआ यादगार समापन

भोपाल। सात दिनों तक चले साहित्य, कला और संस्कृति के संगम का रविवार को रंगारंग व आतिशी समापन हुआ। इस औपचारिक समापन सत्र में मुख्य अतिथि छत्तीसगढ़ की राज्यपाल माननीय डॉ. अनुसूइया उइके, संस्कृति मंत्री, मप्र उषा ठाकुर, लोक स्वास्थ्य एवं कल्याण विभाग मंत्री, मप्र श्री प्रभूराम चौधरी एवं विश्व रंग के निदेशक संतोष चौबे एवं विश्व रंग परिवार के सभी सदस्य उपस्थित रहे। माननीय डॉ. अनुसूइया उइके ने कहा कि विश्व रंग आयोजन में देश दुनिया की कला, संस्कृति और साहित्य का संगम हुआ है। साहित्य एवं संस्कृति के इस वैश्विक आदान प्रदान से भारतीय युवाओं को भी भारत के साथ दुनिया की संस्कृति का ज्ञान होगा। यह आयोजन भारतीय संस्कृति की विशेषताओं को दर्शाता है। सही मायने में सामाजिकता, कला, संस्कृति के मूल्यों को युवा स्वीकार कर सकें, यह दायित्व साहित्यकारों का है। 21वीं सदी में भारत के विश्वगुरु बनने की राह में विश्व रंग पहला कदम है। मैंने अपने जीवन में अब तक कला, संस्कृति एवं साहित्य पर केंद्रित ऐसा कार्यक्रम न कभी देखा है न कभी सुना है। राज्यपाल ने अपने पुराने दिनों को याद करते हुए कहा कि मैं पहली बार इसी सदन (मिंटो हॉल) में विधायक बनकर आई थी और आज राज्यपाल के रूप में शामिल हो रही हूं। यह सदन मेरे लिए मंदिर है।

संस्कृति मंत्री, मप्र उषा ठाकुर ने कहा कि कई सदियों में संतोष चौबे जैसे महान विभूतियों का जन्म होता है। टैगोर के नाम पर इतना कार्य करना सराहनीय है। कला, संस्कृति साहित्य के संरक्षण एवं संवर्धन की दिशा में काम करने के लिए टैगोर स्वयं भी आशीर्वाद दे रहे हैं जिसका माध्यम संतोष चौबे हैं।

लोक स्वास्थ्य एवं कल्याण विभाग मंत्री, मप्र श्री प्रभूराम चौधरी ने कहा कि विश्व रंग जैसे आयोजन से वैश्विक स्तर पर भाषाओं के साथ संवाद स्थापित होता है। उन्होंने कहा कि विश्व रंग खुशियां का रंग भरने वाला आयोजन है। यह भारतीय कला संस्कृति एवं साहित्य को विश्व पटल पर ले जाएगा।

विश्वरंग की सह-निदेशक डॉ. अदिती चतुर्वेदी वत्स ने पुस्तक यात्रा से लेकर विश्व रंग के समस्त कार्यक्रमों की विस्तार से जानकारी महामहीम को दी। गेट सेट पेरेंट के चिल्ड्रंस लिटरेचर आर्ट एंड म्यूजिक फेस्टिवल की निदेशक डॉ. पल्लवी राव चतुर्वेदी ने बाल महोत्सव की पूरी जानकारी दी और बच्चों के उत्साह को रेखांकित किया। विश्व रंग के सह-निदेशक डॉ. सिद्धार्थ चतुर्वेदी ने आभार प्रकट किया।

विश्व रंग के समापन अवसर पर छत्तीसगढ़ की राज्यपाल मा. डॉ. अनुसूइया उइके को प्रतीक चिन्ह देते हुए विश्व रंग निदेशक श्री संतोष चौबे

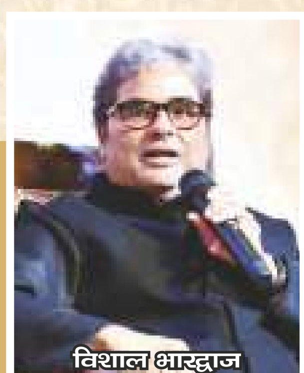

विशाल भारद्वाज

रसिका दुग्गल

अशनीर ग्रोवर

विश्व रंग के अंतिम दिन विभिन्न सत्रों में फिल्म निर्देशक, विशाल भारद्वाज, अभिनेत्री, रसिका दुग्गल एवं भारत पे के फाउंडर, अशनीर ग्रोवर हुए शामिल

लोक स्वास्थ्य एवं कल्याण विभाग मंत्री श्री प्रभुराम चौधरी व संस्कृति मंत्री उषा ठाकुर को विश्व रंग के समापन अवसर पर प्रतीक चिन्ह देते हुए सह निदेशक डॉ. सिद्धार्थ चतुर्वेदी

ओ.टी.टी. के जरिए फिल्मों को दर्शकों तक पहुंचाना हुआ आसान

रसिका दुग्गल

विश्व रंग के अंतिम दिन सुबह के सत्र 'नई कहानियों का नया मंच' में मशहूर अभिनेत्री रसिका दुग्गल विश्व रंग के दर्शकों से रूबरू हुईं। डॉ. पल्लवी राव ने सत्र के विषय को केंद्र में रखकर कई सवाल पूछे। जब उनसे पूछा गया कि शुरुआत कहाँ से और कैसे हुई तो उन्होंने बताया कि वे फिल्म इंस्टीट्यूट के बारे में पहले ज़्यादा कुछ नहीं जानती थी लेकिन जब दाखिला लिया और कुछ समय बिताया तब उस जगह के बारे में जान पायीं कि वो जगह कितनी अद्भुत है। नए प्लेटफ़ॉर्म के बारे में बातचीत के दौरान उन्होंने कहा कि पहले भी शॉर्ट फिल्म बन रहीं थीं। फिल्म बन कर तैयार हो जाती थी लेकिन उन्हें दर्शकों तक पहुंचाना बहुत मुश्किल होता था। उनका डिस्ट्रीब्युशन ही नहीं हो पाता था। फिल्म बन कर पड़ी रहती थी लेकिन अब ऐसा नहीं है। इतने सारे ओ.टी.टी. प्लेटफ़ॉर्म हो गए हैं। यू ट्यूब भी है। मिलियंस व्यू एक- दो दिन में ही आ जाते हैं। अब फिल्मों को दर्शकों तक पहुंचाना बहुत आसान हो गया है। उन्होंने मिर्जापुर और दिल्ली क्राइम के अपने किरदारों पर भी बात की। जब डॉ. पल्लवी ने उनसे पूछा कि दुनिया में आपकी सबसे पसंदीदा जगह कौन सी है तो उन्होंने बताया कि कश्मीर उन्हें बेहद पसंद है। उन्होंने यह भी कहा कि जब आप किसी जगह बतौर टूरिस्ट जाते हैं तो उन जगहों के भीतरी पहलू आपसे अनछुए रह जाते हैं लेकिन जब शूटिंग करने जाते हैं तो बहुत करीब से उन जगहों को देख पाते हैं वहां के लोगों से बातचीत और उन्हें समझने के मौके मिलते हैं। कश्मीर में शूट की गई फिल्म हामिद के अनुभव भी उन्होंने शेयर किये। यह भी कहा कि अपने किये हुए काम का असर अगर खुद आप पर नहीं हुआ तो फिर उस काम को करने का कोई मतलब नहीं। श्रेताओं में शामिल युवा कलाकारों ने भी रसिका से भरपूर सवाल किए और रसिका ने विस्तार से उनके जवाब दिए।

TAGORE INTERNATIONAL LITERATURE & ARTS FESTIVAL
विश्व रंग
भारतीय संस्कृति, वैश्विक मंच!

कम बजट में अच्छा कॉन्टेंट देता है ओ.टी.टी . ---- विशाल भारद्वाज

महत्वपूर्ण सत्र में 'भारत का उभरता नया सिनेमा' विषय पर लेखक, फिल्म निर्माता विशाल भारद्वाज और एंकर इरफान ने बातचीत की। चर्चा में एंकर इरफान ने श्री भारद्वाज से बदलते सिनेमा पर सवाल किया तो उन्होंने कहा कि जब कोई नई चीज या तकनीक आती है तो उसमें कई अच्छाईयां भी होती है और कई बुराईयां भी। मैंने ओटोटी में हमेशा अच्छाइयां देखी हैं। बदलाव हर दौर में हुये हैं। एक दौर आया जब मुंबई में बड़ी-बड़ी रिकॉर्डिंग की जाती थी। जहां 50-50 म्यूजिशियन बैठकर संगीत प्ले कर रहे होते थे। लेकिन कुछ समय के बाद म्यूजिक इंडस्ट्री में बदलाव हुआ और नये संगीतकार इंडस्ट्री में उभरकर आये और आज हमारे संगीत को अंतर्राष्ट्रीय पहचान मिली। ओटीटी का आना अच्छा है फिल्म में समय की बंदिश है। ओटीटी का सीधा नाता कॉमर्शियल और इकॉनोमी से है। साथ ही इसमें बजट कम लगता है अच्छा कंटेट मिल रहा है। आज स्मॉल टाउन में भी वेब सीरीज बन रही हैं। इसमें सेंसरशिप नहीं है।

अनुभव साझा करते हुये उन्होंने कहा कि फिल्म मकबूल की स्क्रिनिंग के लिये सेंसर ने मुझे बुलाया। थियेटर के अंदर जाते ही वहां बैठी एक महिला ने मुझसे कहा कि ऐसी फिल्म क्यों बना रहे हो? इससे क्या फायदा होगा। कई सवाल किये। तो ओटीटी में इन सवालों से नहीं गुजरना पड़ता है। हां अगर आजादी मिल जाती है तो 90 प्रतिशत तो पहले गंदगी सामने आयेगी लेकिन समय के साथ अच्छे और खूबसूरत विषय ओटीटी पर दिखाई देने लगेंगे। आज ओटीटी में सब इन्वॉल्व हो रहे हैं। रचनात्मकता दिखाई दे रही है। इसके लिये हर एक स्टेट को इन्वॉल्व होना भी जरूरी है जो अभी कम है। इस सत्र का संचालन वरिष्ठ कला समीक्षक श्री विनय उपाध्याय द्वारा किया गया।

Vishwarang Partner Countries

IRELAND | QATAR | JAPAN | KENYA | U.K. | DENMARK | BELGIUM | BANGLADESH | MAURITIUS | CHINA | LUXEMBOURG | SOUTH AFRICA | NEW ZEALAND | GERMANY | NEPAL | BELGIUM | GHANA | PORTUGAL

अशनीर ग्रोवर

सिद्धार्थ चतुर्वेदी

आज भारत का समय आया है...

मैं हिन्दी में बात करता हूं ताकि अपनी बात जल्दी और आसानी से समझा सकूं

रबीन्द्रनाथ टेगोर विश्वविद्यालय द्वारा वैशविक स्थर पर आयोजित विश्व रंग 2022 के अंतिम दिन पहले सत्र में 'व्यापार के बदलते रूप और मातृ भाषा के प्रभाव' विषय पर भारत पे के फाउंडर और शार्क टैंक इंडिया के सेलेब्रिटी 'शार्क' अशनीर ग्रोवर ने विश्व रंग के सह-निदेशक सिद्धार्थ चतुर्वेदी के सवालों के जवाब अपने चिर-परिचित अंदाज में ही दिए। पहला सवाल करते हुए सिद्धार्थ चतुर्वेदी ने पूछा कि आखिर अशनीर एक साहित्य महोत्सव में क्या कर रहे हैं क्योंकि यह कोई स्टार्टअप या एंटरप्रेन्योरशिप का मंच नहीं है। इस पर अशनीर ने कहा, मुझे भोपाल काफी पसंद है। यहां काफी सारी चीजें है जिनका प्रमोशन होना चाहिए, इसलिए भोपाल आना ही था। इसके अलावा मैंने हाल ही में एंटरप्रेन्योरशिप पर पुस्तक 'दोगलापन' लिखी है जिसका प्रमोशन करना जरूरी था। इसलिए विश्वरंग का यह साहित्य महोत्सव का मंच एक उपयुक्त जगह है जहां डिफरेंट ऑडियंस से मिलने का मौका मिलता है।

'दोगलापन' किताब में क्या है, के सवाल पर अशनीर बताते हैं कि यंग एंटरप्रेन्योर्स को अक्सर क्लेरिटी नहीं होती कि क्या करना है क्या नहीं करना है। यह किताब नंबर्स को समझना, एंटरप्रेन्योरशिप की चुनौतियां इत्यादि इसके हर पहलू पर बात करती है। हम जानते हैं स्टार्टअप के कल्चर को घर घर तक लेकर शार्क टैंक इंडिया गया है, पर अभी भी काफी काम किया जाना बाकि है। यह उसी कड़ी में एक प्रयास है।

इसके बाद हमेशा हिंदी में बात करने और ग्रोथ में हिंदी भाषा के रोल पर जवाब देते हुए अशनीर कहते हैं कि आमतौर पर अंग्रेजी ोलने वाले लोगों को ज्यादा पढ़ा लिखा ामझा जाता है, पर मुझे लगता है शायद मने अंग्रेजी को ज्यादा ही महत्व दे दिया है। बकि जो बात 20 मिनट अंग्रेजी बोलकर समझाते हैं वो हिंदी में 2 मिनट में समझाई जा सकती है। मुझे लगता है टाइम खराब मत करो। आज इंडिया का टाइम आया है। आज जितनी अपॉर्च्युनिटी है स्टार्टअप की वो 20 साल बाद देश के डेवलप होने के बाद उतनी नहीं रहेगी। इसलिए मैंने हिंदी को ही लाइफ में अडॉप्ट कर लिया। मैंने एमएनसी में भी जॉब की है, इसलिए अंग्रेजी में बातें ड्रामा ज्यादा लगती हैं।

'शार्क टैंक इंडिया' शो कितना स्क्रिप्टेड होता है, इस सवाल के जवाब में अशनीर कहते हैं कि सीजन 1 तो स्क्रिप्टेड नहीं था। मैंने इसमें बिल्कुल असली पैसों से स्टार्टअप में इंवेस्ट किया है। और वैसा भी जहां पैसा रियल होता है, वहां सब रियल होता है। जहां पैसा झूठा होता है वहां सब झूठा होता है। हां यह जरूर लगता है कि शो में शायद मसाला लाने के लिए कुछ ड्रामा पिच वाले स्टार्टअप को भी रखा गया था जैसे गोल नाभी, सिप लाइन।

इसके अलावा उन्होंने मीम कंटेंट पर बात करते हुए कहा कि यह अच्छा कल्चर है। आज फिल्में पिट रही हैं, लेकिन रील्स चल रही हैं। लोगों के पास देड़ मिनट से ज्यादा टाइम नहीं है। मुझे भी समझ आ गया कि कंटेंट चेंज हो गया है । मैसेज भेजना है तो रील्स बनाओ।

एक सवाल के जवाब में अशनीर कहते हैं कि जहां सरकार नहीं है, वहां ग्रोथ आसान है। यह बात आईटी और स्टार्टअप सेक्टर में देखने पर सच दिखाई पड़ती है।

TAGORE INTERNATIONAL LITERATURE & ARTS FESTIVAL
विश्व रंग
भारतीय संस्कृति, वैश्विक मंच!

समानांतर सत्र - प्रेमचंद सभागार

कविता का समकाल
परिवार और संबंधों का पुनर्वास

सतोष चौबे, बलराम गुमास्ता,
अरूण देव, नवल शुक्ल,निरंजन श्रोत्रिय,
मोहन सगोरिया, सविा भार्गव, रक्षादुबे चौबे

समकालीन कविता में
प्रेम और करूणा : संवाद और पाठ

उपेंद्र कुमार, जानकी प्रसाद शर्मा,
कुमार अनुपम, जितेन्द्र श्रीवास्तव
राकेश रेणु, अनिल मिश्र, प्रियदर्शन

वेब सीरीज पर नायक
बनी कहानियां

विश्वपति सरकार और समीर सक्सेना
की विकास अवस्थी से बातचीत

समानांतर सत्र - निराला सभागार

जनजातीय साहित्य एवं
कलाओं में विश्व दृष्टि

लक्ष्मण गायकवाड़, त्रिलोक महावर,
महादेव टोप्पो, देवीलाल पाटीदार,
प्रेमशंकर शुक्ल

हाशिये का साहित्य-
परिचर्चा

शरण कुमार लिंबाले, आदिल रज़ा मंसूरी,
जयप्रकाश कर्दम, जयंत परमार,
लक्ष्मण गायकवाड़, गंगाशरण

बहुभाषी युवा
कविता समय

जमुना बीनी, वंदना टेटे - मणिपुरी,
तूलिका चेतिका येन, पूर्णिमा सरोज- हलबी
प्रो. देवशंकर नवीन

समानांतर सत्र - वनमाली सभागार

कथा का समकाल :
कहने के नये उपकरण

सतीश जायसवाल, भगवानदास मोरवाल
आनंद हर्षुल, प्रकाश कांत
उमाशंकर चौधरी, श्रद्धा थवाइत,
कुणाल सिंह

पांच व्यंग्यकार

ज्ञान चतुर्वेदी, प्रेम जनमेजय,
मलय जैन, शांतिलाल जैन
कैलाश मंडलेकर, मुकेश वर्मा

पौराणिक कथाएं :
इतिहास और कल्पित कहानियां

केविन मिसल की
डॉ. नीलकमल कपूर से बातचीत

समानांतर सत्र - महादेवी सभागार

सपनों की दुनिया में ब्लैक -होल : पाठ और चर्चा

महादेवी सभागार में रविन्द्र नाथ टैगोर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति व विश्वरंग के निदेशक संतोष चौबे की आमजनों को लेकर सत्तातंत्र की वास्तविकता पर केंद्रित उपन्यास 'सपनों की दुनिया में ब्लैक-होल' पर चर्चा की गई, जिसमें कुलाधिपति संतोष चौबे के साथ साथ देश के नामचीन हिंदी आलोचक शंभु गुप्त व विनोद तिवारी शामिल रहे। उपन्यास का सार बताते हुए श्री चौबे ने कहा कि एक साजिश के तहत देखने की शक्ति क्षीण करने की कोशिश शक्तिशाली तंत्र के माध्यम से किए जाने का प्रत्यक्ष एहसास होता है, जिसका सकारात्मक विकल्प की ओर यह उपन्यास इशारा करती है।

साहित्य के विश्व सरोकार : प्रेम और करूणा

माधव कौशिक, आशीष अग्निहोत्री, राकेश कुमार, जानकी प्रसाद शर्मा, अख़लाक अहमद आसन, शाफे अहमद किदवई, धनंजय वर्मा, सुधीन सक्सेना

दिव्यांग कवियों का कविता पाठ

दिव्यांग कवियों के कविता पाठ में रफीक अहमद, डॉ विनोद आसुदानी आरिफा शबनम, रफीक अहमद नागौरी, एलपी डहेरिया ने अपनी रचनाएँ सुनाईं

लेखक से मिलिए

ज़ाहिद खान की तरूण भटनागर से बातचीत

बलराम गुमास्ता की अरूण देव से बातचीत

उर्मिला शिरीष की वीणा सिन्हा से बातचीत

आशुतोष की नीरज खरे से बातचीत

मुकेश वर्मा की राकेश मिश्र से बातचीत

शशांक की उर्मिला शिरीष से बातचीत

TAGORE INTERNATIONAL LITERATURE & ARTS FESTIVAL
विश्व रंग
भारतीय संस्कृति, वैश्विक मंच!

14-20 NOVEMBER 2022, BHOPAL(INDIA)

आदिवासी साहित्य एवं कला महोत्सव : 18-20 नवम्बर
टंट्या भील प्रांगण

आदिवासी साहित्य एवं कला महोत्सव के उद्घाटन सत्र को सम्बोधित करते हुए विश्व रंग के सह निदेशक सिद्धार्थ चतुर्वेदी

पैनल चर्चा : आदिवासी साहित्य-योगदान और चिंताएं

जनजातीय साहित्य और भारतीय साहित्यिक परंपराएं

युवा आदिवासी लेखक- उनके विषय, मुद्दे और चुनौतियां

लुप्तप्राय भाषाएं- मुद्दे, संरक्षण और पुनरोद्धार

आदिवासी चित्रकला कार्यशाला

Vishwarang Partner Countries

IRELAND | QATAR | JAPAN | KENYA | U.K. | DENMARK | BELGIUM | BANGLADESH | MAURITIUS | CHINA | LUXEMBOURG | SOUTH AFRICA | NEW ZEALAND | GERMANY | NEPAL | BELGIUM | GHANA | PORTUGAL

Get.Set.Parent™
A Guide To New Age Parenting
Presents
CHILDREN'S LITERATURE, ART & MUSIC FESTIVAL
विश्व रंग
18th-20th Nov, 2022

गेट-सेट-पैरेंट ने सनडे बनाया फनडे

बच्चों के मन को भाया टिडेलिक

मंच पर झूमें हजारों बच्चे, पल्लवी चतुर्वेदी ने किया फिर मिलने का वादा

भोपाल। आज कुशाभाऊ ठाकरे इंटरनेशनल कन्वेंशन सेंटर में बाल साहित्य एंव कला महोत्सव का भव्य समापन हुआ। इसका समापन गेट सेट पेरेंट विथ पल्लवी, चिल्ड्रंस लिटरेचर आर्ट एंड म्यूजिक फेस्टिवल की फाउंडर और डायरेक्टर डॉक्टर पल्लवी राव चतुर्वेदी ने किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि इस तरह के कार्यक्रमों को करने में बहुत सारे लोगों की मदद की आवश्यकता होती है। आप सभी साथियों ने कार्यक्रम को भव्य बना दिया। शहर के सैकड़ों विद्यालयों से आए हजारों छात्रों और उनके पालकों, कलाकारों, स्वयं सेवकों को कार्यक्रम में आने के लिए धन्यवाद दिया। कार्यक्रम में अपने बच्चों को पहुंचाने के लिए उन्होंने विद्यालयों एवं परिजनों से कहा कि आप बच्चों की शक्ति हैं, आप अपने बच्चों को आगे बढ़ाने में सहयोग करते रहें। इस दौरान कार्यक्रम में आये सभी कलाकारों का सम्मान किया गया। इसके साथ ही डॉक्टर चतुर्वेदी ने कार्यक्रम को सफल बनाने वाले सभी लोगों को हृदय की गहराई से धन्यवाद दिया और फिर मिलेंगे का वादा भी किया। गेट सेट पेरेंट के सत्र तीसरे और आखिरी दिन की शुरुआत बच्चों ने जंगल-जंगल बात चली है सहित अनेक गाने गाए। बच्चों ने बताया कि उनका यह सन्डे आज फन-डे बन गया।

TAGORE INTERNATIONAL LITERATURE & ARTS FESTIVAL
विश्व रंग
भारतीय संस्कृति, वैश्विक मंच!

Lit Zone

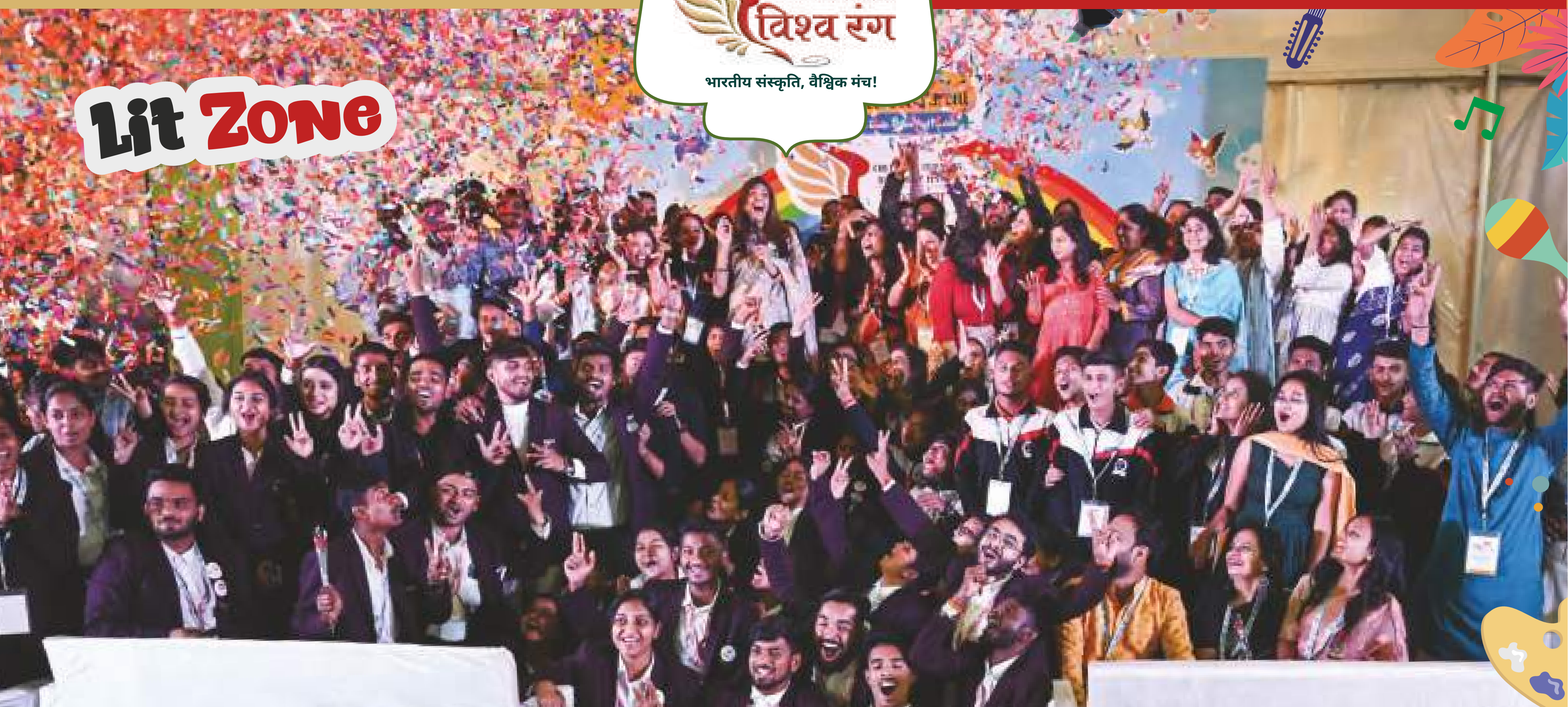

Vishwarang Partner Countries

IRELAND · QATAR · JAPAN · KENYA · U.K. · DENMARK · BELGIUM · BANGLADESH · MAURITIUS · CHINA · LUXEMBOURG · SOUTH AFRICA · NEW ZEALAND · GERMANY · NEPAL · BELGIUM · GHANA · PORTUGAL

Art Street

Vishwarang Partner Countries

INDIA · NETHERLANDS · RUSSIA · FIJI · SRI LANKA · CANADA · UKRAINE · TRINIDAD · UZBEKISTAN · SINGAPORE · AUSTRALIA · UAE · SWEDEN · U.S.A. · KAZAKHSTAN · TOBAGO · BULGARIA · SPAIN

TAGORE INTERNATIONAL LITERATURE & ARTS FESTIVAL
विश्व रंग
भारतीय संस्कृति, वैश्विक मंच!

14-20 NOVEMBER 2022, BHOPAL(INDIA)

Get.Set.Parent™
A Guide To New Age Parenting
Presents
CHILDREN'S LITERATURE, ART & MUSIC FESTIVAL
विश्व रंग
18th-20th Nov, 2022

Vishwarang Partner Countries

IRELAND | QATAR | JAPAN | KENYA | U.K. | DENMARK | BELGIUM | BANGLADESH | MAURITIUS | CHINA | LUXEMBOURG | SOUTH AFRICA | NEW ZEALAND | GERMANY | NEPAL | BELGIUM | GHANA | PORTUGAL

शिल्पा राव के गीतों से विश्व रंग का हुआ खूबसूरत समापन

आसमान में झिलमिल करते तारों के नीचे अपनी वजनदार आवाज में अदभुत समा बांधती शिल्पा राव ने मौला मेरे से जब परफॉर्मेंस की शुरूआत की तो ऐसा लगा मानो जैसे कोई जादू हो गया। फिर शुरू हुआ गाना 'सुभानल्लाह जो रहा है पहली दफा ...। इस दौरान इतना दीवानापन इतना जोश शिल्पा की आवाज ने भर दिया कि विश्व रंग में शामिल हजारों लोग थिरकने लगे। और झीलों की नगरी भोपाल संगीत की ताकत महसूस करने लगी।

जगमगाता स्टेज और सामने झूमता हुजूम एक के बाद एक पेश की गई बेहतरीन परफॉर्मेंस की गवाही सी दे रहे थे। इसके बाद शिल्पा राव ने मौला मेरे मौला मेरे..., कलंक नहीं इश्क है काजल पिया... से श्रेताओं का दिल जीता।

Organised by RNTU Rabindranath TAGORE UNIVERSITY

Powered By: AISECT Education, Empowerment, Enterprise. | AISECT UNIVERSITY JHARKHAND, HAZARIBAG AN AISECT GROUP UNIVERSITY | SCOPE GROUP OF INSTITUTIONS | DR. C.V. RAMAN UNIVERSITY Chhattisgarh Madhya Pradesh Bihar AN AISECT GROUP UNIVERSITY | Get.Set.Parent A Guide To New Age Parenting | Brainy Bear Pre-School & Activity Club

Photos By : Mujeeb Faruqui & Saeed Faruqui **Concept & Design By :** Newman Studio/ Tms